शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 23 | उदयपुर गुरूवार 15 दिसम्बर 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

गांव, युवक और समझ का बदलता स्वरूप

-सदाशिव श्रोत्रिय-

हमारे गांव, हमारे नगर, हमारे गली-मोहल्ले कैसे बेहतर रूप ग्रहण करेंगे यदि किसी का उनसे कोई भावनात्मक लगाव ही न होगा ? किसी स्थान के काबिल और होशियार लोगों का अधिक बड़े और विकसित स्थानों की ओर पलायन कर जाना वैसा ही है जैसा किसी रेलगाड़ी के इंजिन का ही उसे छोड़कर अन्यत्र चले जाना।

वह समय चला गया जब लोग अपनी ज़मीन से, अपने गांव-क़स्बे से ,अपने घर-मुहल्ले से, अपने रिश्तेदारों से, अपने पास-पड़ोसियों से, अपनी संस्थाओं से और अपने देश से प्यार करते थे। कई तरह की कठिनाइयां झेलते हुए, कई तरह के अभावों को सहते हुए, सर्दी-गर्मी और कई प्राकृतिक आपदाओं की मार खाते हुए भी वे अपने स्थान और अपने ही लोगों के बीच बने रहना पसंद करते थे। अपने पुश्तैनी घर और धरती को छोड़ना उन्हें दुर्भाग्यपूर्ण लगता था।

अपनी ज़मीन और जड़ों से लोगों का वह लगाव हमारे यहां जैसे अब बिल्कुल समाप्त हो गया है। ज़्यादा कमाने और ज़्यादा ख़र्च कर पाने की चाह आज के युवाओं को अपनी धरती और अपने लोगों से दूर ले जाते जाते कई बार देश की सीमा ही पार करवा देती है । इस बात का इन युवाओं को अब कोई अफ़सोस भी नहीं होता। पैसे के लोभ ने भारतीय मध्यवर्ग को इस तरह धर दबोचा है कि प्रेम, गुणवत्ता, नैतिकता और सौंदर्य के सारे मूल्यों को ताक पर रख कर युवावर्ग अधिकाधिक कमाने और अधिकाधिक मुनाफ़ा बटोरने पर उतारू है ।

सवाल यह है कि कोई भी वृक्ष तब तक कैसे बड़ा आकार लेकर फल-फूल सकता है जब तक वह लम्बे समय तक एक ही स्थान पर खड़ा रहकर अपनी ज़मीन में जड़ें न जमाए-फैलाए और स्वयं के लिए वह पोषण प्राप्त न करे जो उसे अपनी मिट्टी से ही मिल सकता है ? अपनी ज़मीन से, अपनी ज़बान से, अपनी विरासत और अपनी संस्कृति से कटकर कोई भी व्यक्ति अपने लोगों, अपने समाज और अपने देश के लिए कैसे उपयोगी हो सकता है ?

सवाल यह भी है कि यदि किसी गांव, किसी क़स्बे, किसी मोहल्ले, किसी शहर, किसी संस्था से किसी को लगाव नहीं होगा तो उसकी रक्षा कौन करेगा ? कोई बच्चा इसीलिए तो जीवित रह पाता है और स्वस्थ रहकर बड़ा हो पाता है कि कोई उसे चाहने वाला, उसे प्यार करने वाला, उसके लिए कष्ट उठाने वाला, उसके स्वार्थ को अपने स्वार्थ से ऊ पर रखकर देखने वाला होता है। कोई रुग्ण व्यक्ति इसीलिए तो जीवित रहकर पुन: स्वास्थ्य लाभ कर पाता है कि उसे चाहने वाला कोई उसका रिश्तेदार उसकी देखभाल करने, उसकी सेवा करने, उसे समय पर दवा देने और अपना पैसा और अपना वक़्त खर्च करके भी उसका इलाज़ करवाने के लिए तैयार रहता है। हमारे गांव, हमारे नगर, हमारे गली-मोहल्ले कैसे बेहतर रूप ग्रहण करेंगे यदि किसी का उनसे कोई भावनात्मक लगाव ही न होगा ? यदि सब उन्हें पिछड़ा और अनुपयोगी कहकर अन्यत्र चले जाएंगे या फिर अपने स्वार्थों के लिए उनके स्वास्थ्य, उनकी सुन्दरता, उनके पर्यावरण, उनकी सुरक्षा, उनकी सुविधा, उनकी शांति, उनकी प्रदूषण-रहितता, उनकी सांस्कृतिक समृद्धि आदि की चिंता न कर केवल उनका दोहन करने में लग जाएंगे तो वे कैसे सुरक्षित रहेंगे ? यदि बाहर के स्वार्थी तत्वों के वहां आकर अपने आर्थिक लाभ के लिए उनका दोहन करने पर भी वे चुप रहेंगे और कुछ नहीं कहेंगे तब तो उनके पूरी तरह नष्ट हो जाने को कौन रोक सकेगा ? यदि हर व्यक्ति केवल अपने आराम, अपने आर्थिक लाभ और अपनी सुख-सुविधा के बारे में ही सोचने लगे और इसके लिए किसी स्थान की रक्षा करने वाले और वहां व्यवस्था बनाए रखने वाले समूचे तंत्र को ही नष्ट-भ्रष्ट हो जाने दे तो इसका परिणाम अंतत: क्या हो सकता है ? यदि किसी संस्था को अपनी सेवाएं देने वाले केवल अपने वेतन से मतलब रखें और उन सेवाओं की उपयोगिता और प्रभावोत्पादकता के बारे में अपने आप से कभी प्रश्न ही न करें तो इसे उनकी घोर अनैतिकता और स्वार्थपरता के अलावा क्या कहा जाएगा ? उनका काम तब उस संस्था की प्रगति और उसकी भूमिका की सार्थकता में कितनी वृद्धि कर पाएगा ?

किसी स्थान के काबिल और होशियार लोगों का अधिक बड़े और विकसित स्थानों की ओर पलायन कर जाना वैसा ही है जैसा किसी रेलगाड़ी के इंजिन का ही उसे छोड़कर अन्यत्र चले जाना। जो लोग अपने विकसित ज्ञान और बुद्धि की बदौलत आज किसी जगह की उन्नित में कोई महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं वे ही पलायन की इस निरंतर बढ़ती प्रवृत्ति के फलस्वरूप उसके लिए अनुपयोगी और पराए होते जा रहे हैं। परीक्षित साहनी ने एक बार आकाशवाणी के एक साक्षात्कार में कहा था कि उनके सोवियत रूस में बस जाने की चाह ज़ाहिर करने पर पं.नेहरू ने उन्हें कैसी ज़बरदस्त फटकार लगाई थी। क्या हमारे आज के नेताओं में वैसी नैतिकता और आत्मविश्वास है जिससे वे विदेश में बसने की चाह रखने वाले युवाओं को सीख भी दे सकें।

सामंती काल में स्थानीय शासक आज की तुलना में अपनी ज़मीन और अपने लोगों से अधिक घनिष्ठता से जुड़े रहते थे। कई अच्छे स्थानीय शासक अपने प्रदेश को आगे लाने के लिए सचेष्ट प्रयत्न भी करते रहे। प्रतिभावान लोगों को संरक्षण देकर उनकी प्रतिभा निखारने में भी वे सहायक होते थे। कानून-व्यवस्था बनी रहे और प्रजा की ज़रूरतें पूरी होती रहे, इसके लिए भी वे चौकन्ने रहते थे। आज भूमंडलीकरण के नाम पर हर जगह जो बदलाव आया है उसने स्थानीयता के उन तमाम खूबसूरत और वैविध्यपूर्ण रंगों को चौपट कर रख दिया है।

प्रगति और विकास की व्यवस्था ने स्थाई संरक्षकों का अभाव पैदा कर दिया। इसका एक कारण यह भी रहा कि जो लोग किसी एक समय सत्ता में होने के कारण प्रभावी रहे वे आगे चल कर सत्ता से बाहर हो जाने के कारण अप्रभावी हो गए। सत्ताधारियों के बदलाव के साथ हमारे राजकीय शासक-प्रशासक भी हर जगह बदलते रहे। किसी गांव, क़स्बे या शहर के लिए स्थाई रूप से चिंता करने वाले और लम्बे समय तक किसी विशिष्ट दिशा में उसके विकास को देखते रहने वाले लोगों की संख्या में कमी होती चली गई। राजनीतिक दलों की सरकारों के साथ-साथ अफसरों और कर्मचारियों का स्थानांतरण आम बात हो गई। बदले की राजनीति ने भी बड़ा गड़बड़ किया। यह देखकर निराशा होती है कि चुनाव क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग ही अब उन क्षेत्रों में बसने को पिछड़ेपन के रूप में देखते हैं। कई बार तो किसी बड़े राजनीतिक दल का चुनाव लड़ने और जीतने वाला जनप्रतिनिधि भी उस स्थान से बाहर का ही होता है जिसे उस स्थान, वहां के निवासियों और उनकी समस्याओं की बहुत कम जानकारी होती है। चुनाव जीत जाने पर भी ऐसे जनप्रतिनिधियों का संपर्क स्थानीय लोगों में केवल उनके कार्यकर्ताओं तथा उनके सत्ता में बने रहने में सहायक लोगों से रहता है। स्थानीय लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार को ऐसे जनप्रतिनिधि बहुत गंभीरता से नहीं लेते।

सच तो यह है कि अपने नगर से प्रेम करने वाले, उसे अधिक सुन्दर और व्यवस्थित बनाने वाले तथा सभी का कल्याण व उत्थान चाहने वाले लोग अब अव्यावहारिक और आदर्शवादी कहकर ख़ारिज कर दिए जाते हैं। चुनाव तंत्र भी अब इतना महंगा और पेचीदा हो गया है कि कोई आदर्शवादी नेता चुनाव नहीं जीत सकता। सत्ता और धन का गठबंधन आज इतना सुदृढ़ हो गया है कि उसमें ग़रीब नागरिक का कहीं कोई लेखा ही नहीं रह गया है।

786 के नोटों का अलभ्य संग्रह यथावत रखूंगा : भाणावत

नोटबंदी के प्रभाव को देखते हुए उदयपुर के करेंसीमेन विनय भाणावत ने बताया कि वे 786 संख्या वाले 500 तथा 1000 के नोट बैंक में जमा नहीं करवायेंगे। इसी संग्रह की वजह से वे विश्व में अपनी पहचान बनाये हुए हैं।

भाणावत ने बताया कि उन जैसे एक जैन संग्रहकर्ता ने मुसलमानों के सर्वमान्य पवित्र अंक वाले नोटों का अलभ्य संग्रह कर रखा है। उन्होंने अपने इस संग्रह द्वारा तीन मुस्लिम राष्ट्र-पाकिस्तान, बंगलादेश और दुबई का रेकार्ड तोड़कर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है।

बालिका को मिली ब्रेन ट्यूमर से निजात

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों ने 13 वर्षीय बालिका का सफलतापूर्वक ऑपरेशन कर उसे ब्रेन ट्यूमर से निजात दिलाई है।

पीआईएमएस के वाइस चैयरमैन आशीष अग्रवाल ने बताया कि उमरड़ा निवासी 13 वर्षीय बालिका गीता मीणा एक वर्ष से सिर दर्द से परेशान थी। परिजनों ने जांचें करवाई तो बालिका को ब्रेन ट्यूमर होने की जानकारी मिली। ब्रेन ट्यूमर के कारण ऑप्टिक नर्व पर दबाव पड़ रहा था जिससे बालिका को ना के बराबर दिखाई देने लग गया। इस दौरान किसी ने उन्हें पीआईएमएस उमरड़ा में बालिका को दिखाने को कहा।

इस पर परिजन बालिका को लेकर पीआईएमएस पहुंचे। वहां न्यूरो सर्जन डॉ. सुभाष झाखड़ और उनकी टीम ने जांचे देखने के बाद बालिका का सफल ऑपरेशन किया। ऑपरेशन के बाद बालिका अब पूर्ण रूप से स्वस्थ है और उसकी आंखों की रोशनी भी वापस आ गई है।

स्मृतियों के शिखर (22) : डॉ. महेन्द्र भानावत

बहुगणी कलाकार पं. लक्ष्मीनारायण राव

ब्रह्मभट्ट पं. लक्ष्मीनारायण कई कलाओं में पारंगत, प्रवीण तथा पारखी थे। अच्छे वादक, अच्छे गायक, अच्छे नर्तक, अच्छे वाचक और साहित्य सर्जक के साथ-साथ प्राचीन धर्मग्रंथों, शास्त्रों तथा लोकजीवन में व्याप्त अनगिनत कथा-किस्सों के गहरे जानकार तथा सुधि समर्थ व्याख्याकार थे। उनसे मिलना अैर बातचीत करना कई तरह की सार्थक जानकारियों से समृद्ध होना था। शोधार्थियों के लिए तो वे अर्थवान शोधसूत्र ही सिद्ध हुए लगते थे।

लक्ष्मीनारायण का जन्म कुरज गांव में सन् 1940 की शिवरात्रि को हुआ। उनके पिता देवकिशन पहुंचे हुए कथावाचक थे। वे सारंगी पर कथा का ऐसा रस बिखेरते कि श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते। वे जिसका वर्णन करते, नायक, नायिका, वृक्ष, पशु या पक्षी उसकी कई विशेषताओं से परिचित करा देते।

वे 77 वर्ष तक जीवित रहे। जब लक्ष्मीनारायण तेरह वर्ष के थे उनकी माता भी चल बसी। सदावृक्ष सावलिंगा, लाखा फूलाणी, सरवहिया कहवाट, खीमजी आभलदे, बगड़ावत महाभारत जैसी गाथा-वार्ताएं उन्हें बड़ी कंठस्थ थीं। एक सधेसधाये कथक्कड़ के रूप में वे आठ-आठ, पंद्रह-पंद्रह रातों में समाप्त होने वाली लोकजीवन में व्याप्त कथा-वार्ताएं बड़े चाव और रस के साथ सुनाते थे। लक्ष्मीनारायण को यह सब विरासत में मिला। अपने पिता की तरह उन्हें भी सैकड़ों कथा-गाथा-वार्ताएं मौखिक याद थीं। उन्हें सुनाकर वे सरस राग रति रंग की उदात्त भावभूमि में पहुंचाकर श्रोताओं के समक्ष चित्र-वृष्टि करते थे।

लक्ष्मीनारायण काव्यशक्ति के जबर्दस्त प्रणेता थे। नायिकाओं के वर्णन सुनें या डिंगल के बावन छंदों का तदनुरूप उच्चारण ; साक्षात वही दृश्य उपस्थित हुआ मिलता। अब तो वैसी बंदिश और उच्चारण करनेवाले भी मुश्किल से मिलते हैं। नृत्य की ढाई हजार बंदिशें कोई उनसे सुने। इतनी सारी उपलब्धियों का श्रेय वे अपने गुरुजनों को देते। उनके पहले गुरु तो मालीखेड़ा गांव के ही थे जिनसे वे पन्द्रह दिन पढ़े और पोथी बांचना आ गया।

लोक और शास्त्रीय दोनों तरह के गायन वादन तथा नर्तन में पं. लक्ष्मीनारायण उस्ताद थे। नृत्य सम्राट पद्मश्री शम्भू महाराज से उन्होंने कत्थक सीखा। नाथद्वारा रहकर पखावज के प्रख्यात वादक पुरूषोत्तमदास से पखावज सीखी। उस्ताद कम्माखां से सारंगी सीखी तो फरूद्दीन डागर से नोटेशन का ज्ञान अर्जित किया।

पहली अगस्त 2003 को मेरे निवास पर श्री राव ने बताया कि कम्माखां अंत तक कलामंडल में रहे। उनके जैसा सारंगीया दूसरा नहीं हुआ। वे मोटे तार पर चारों अंगुलियों से सारंगी को साधते थे। लक्ष्मीनारायण गुड़ली के गंगाराम की रासधारी मंडली में चार वर्ष रहे जहां पूरणमल, प्रहलाद तथा रासधारी ख्याल में भाग लिया। वे वर्ष भर चित्तौड़ के चैनराम की तुर्रा मंडली में भी रहे। मोड़ीबाठेड़ा में मगननाथ की मंडली में भी दो वर्ष रहे। मगननाथ गंगानाथ के पुत्र थे। गंगानाथ अच्छे कवि थे जिन्होंने जीवराजजी की अर्जी तथा सनातन धर्ममाला लिखी। मथुरा की रामलीला मंडली में भी राव ने काम किया।

श्री राव ने केशव कोठारी से कत्थक के नोटेशन की शिक्षा ली। वे राजस्थान संगीत नाटक अकादमी में भी दो वर्ष रहे जहां कोमल कोठरी के साथ मेवाड़-वागड़ का भ्रमण कर पंचपदा मृदंग ढोलक जंतर मादल थाली इकतारा अपंग रवाज जैसे वाद्यों का संग्रह किया। इन वाद्यों का केवल संग्रह ही नहीं किया, उन्हें बजाना भी बताया। यही कारण है कि वे ढाक मृदंग तबला हारमोनियम तानपुरा बांसुरी वायलिन सितार पखावज सारंगी चौतारा आदि को बजाने के साथ-साथ उनकी खूबियों और बारीकियों को भी बखूबी समझने के कुशल अध्येता थे।

लक्ष्मीनारायण राव बहुश्रुत कलाकार थे। जहां भी भेंट हो जाती उनकी ज्ञान-गंगा खलक पड़ती। कोई विषय, बात, गल्प, घटना हो, उसकी अद्भुत जानकारी का कमाल और प्रस्तुति का कौशल देखते ही बनता। भारतीय लोककला मण्डल में भी उसके प्रारंभिक काल में उन्होंने अपनी यादगार सेवाएं दीं। मैं वहां सन् 1958 में गया तब तक लक्ष्मीनारायण उसे छोड़ चुके थे पर वहां के कलाकार लगातार उनके बहुप्रशंसित कला-करिश्मों की जानकारी देते रहे।

बाद में उनसे जब भेंट हुई तो पचासों किस्से और सार की बातें तथा हर विषय की अज्ञात जानकारियां भी मिलीं जिनका मैंने भरपूर उपयोग भी किया। वे कईबार मेरे निवास पर भी आये और मैं भी उनके निवास पर जाता रहा। वे हर दृष्टि से हंसमुख, मुखर तथा कलावन्त ही लगे।

17 सितम्बर 2002 को जब वे मेरे निवास पर आये तो उनसे लम्बी-चौड़ी बातें होती रहीं। वे ख्यालों की कई धुनों की गायकियों में सिद्धहस्त थे। उन्होंने मुझे तुर्राकलंगी, शेखावाटी, मारवाड़ी, मेवाड़ी ख्यालों तथा रावलों, भवाइयों, रासधारियों की गायकी से भी परिचित कराया।

एकबार जब लोकवाद्यों की चर्चा चली तो उन्होंने कहा कि वाद्य सचमुच में साढ़ा तीन ही हैं। इनसे जुड़ी कहावत भी है- 'साढ़ा तीन राजा नै साढ़ा तीन बाजा।' बाजों अर्थात् वाद्यों पर तो मैं लिख चुका था पर राजा साढ़ा तीन होते हैं, नहीं सुना था। उन्होंने तपाक से बताया- कविराजा, योगीराजा और महाराजा तो सभी जानते हैं पर आधे में बींदराजा यानी दूल्हेराजा होते हैं जो अल्पकालीन राजा बनते हैं जब वे विवाह-सूत्र में बंधते हैं।

श्री राव ने भाटों के जिक्र में कहा कि उनकी नौ कली हैं। कली से तात्पर्य जातियां हैं। उनमें खमणोरा, बागोरा, कापड़िया, केदारा, चंडीसा, शाख, देसूंदी, राणीमंगा तथा हरबोला जात होती है। ये सभी जातियां राजस्थान में

पाई जाती हैं। हरबोला मुख्यत: सक्रांति पर मांगते हैं। ऐन सुबह ये पेड़ों पर चढ़ जाते हैं और नीचे पाल-पछेवड़ा बिछा देते हैं। राहगीर को देख ये भगवान का नाम लेते हैं। बोलते हैं- लामड़ी कोटड़ी लूमजा माई / भोल्या की वाटकी भरदे माई / म्हेर रात का लेवे नाम / जै गंगा माई जै गंगा और बदले में कांचली-कापड़ा लेते हैं।

ये मुख्यतया जाटों, गायरियों और अहीरों में मांगते हैं जो इनके जजमान हैं। देसूंदी राजपूतों के होते हैं। केदारा कुम्हारों, अहीरों, वैरागी साधुओं के तथा धोबियों के होते हैं। बेकार, भैकार, तंतकार के भाट नहीं होते। बेकार में राजपूतों के, जैकार जैसे जाटों के शंकर्‌या कलाकार, भैकार अहीरों के तथा तंतकार गूजरों के होते हैं। ये सूकड़ी देते हैं। चारों गाने-बजाने का काम करते हैं। कविताएं भी बोलते हैं पर कविता करने का इनका पेशा नहीं होता।

श्री राव ने कविता करना बचपन से ही शुरू कर दिया था। सात वर्ष की उम्र में अपने ही नाम कवि लक्ष्मीनारायणलालजी, के प्रत्येक अक्षर से प्रारंभ कर बारह पंक्तियों की देवी करणी की अरजी लिखी। इससे उनकी कवित्व-प्रतिभा का पता चलता है। यह अरजी इस प्रकार थी-

करुणा सुनो करणी कर कृपा दृष्टि / विघ्न हरण भव दुख मेटनहारी / लगन लगी है तेरे चरण कमल की / क्षण भर भूलूं नहीं ज्योति तिहारी / मिल-मिल देव ऋषि तेरा गुण गावै / नाम रटे जो तेरा महा सुख पावै / राखो शरण अपना दास समझके / यमन चमन करजे खड्ग खप्परवारी / नव-नव दिन तेरी रात जगाऊं / लाल सिंदूर तेरे शीश चढ़ाऊं / लगाय धूप बत्ती आरती उतारूं / जीताओ दंगल मेरी लाल झंडीवारी॥

भारतीय लोककला मंडल में जब सन् 1952 में उसकी स्थापना हुई थी, उन्हें देवीलाल डांगी ले गये जो स्वयं अच्छे कलाकार थे। उन्होंने ही उन्हें देवीलाल सामर से मिलाया। कलामंडल में नृत्यकार के रूप में पं. लक्ष्मीनारायण ने तब भैरू थांने पूजां, काना थारी गोपियां ने बाजूबंद सोवै सा तथा राणी तूने जुलम कर डाला, वन में भेजे सीताराम गीत पर नृत्य तैयार किये। यह नौकरी पैंतालीस रूपये माहवार की थी। उसके बाद एकबार और वे कलामंडल रहे जब 18 वर्ष के थे। उस समय कलामंडल सरदारपुरा में झाला साहब के बंगले में चलता था जहां आज सेंट्रल अकादमी स्कूल चलता है। कलामंडल में उन्होंने ढोलामारू, मीरां मंगल, रासधारी ख्याल-नृत्य तैयार किया।

सामर साहब उन्हें एकसौ रूपया माहवार देते। अपने घर पर खाना खिलाते तथा स्वयं की साइकिल पर बिठा कलामंडल ले जाते। सबसे पहले वे ही कलामंडल में मोलेला की मूर्तियां लाये। लोकदेवता की सूची तैयार की। लोकगीतों की धुनों पर देश निर्माण तथा पंचवर्षीय योजनाओं के गीत लिखे और उनका मंचन किया। सामरजी गौरवर्ण के रूपवान कलाकार थे। सफेद पाजामा जब्बा और कत्थई रंग की पुट्ठे की टोपी उनकी खास पहचान थी।

सन् 1952 में कलामंडल का पहला प्रदर्शन उदयपुर के पिक्चर पेलेस नामक सिनेमा घर में दिया गया। उस अवसर पर मेवाड़ महाराणा भूपालसिंह उपस्थित थे। उनके सम्मुख मीरां मंगल नामक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई। उसके बाद राजमहलों में ढोलामारू नृत्यनाटिका तथा 'ओ नीला घोड़ा रा असवार' नाटक प्रदर्शित किया गया जो सामरजी का लिखा था।

राजस्थान विद्यापीठ के कम्यूनिटी सेंटर में भी लक्ष्मीनारायण एक वर्ष रहे फिर सरकारी स्कूल में सिरोही बांसवाड़ा डूंगरपुर रहे। उदयपुर के मीरां महाविद्यालय में भी रहे। मावली में थे तब नौकरी छोड़ दी। कलाकार का स्वाभिमान और सत्व उन्हें जगह-जगह घाट-घाट का पानी पिलाता रहा मगर वे जहां भी रहे, जिसका भी सान्निध्य मिला, सत्संग मिली, जो भी पढ़ा सुना उसे तत्काल हृदयंगम कर लिया और इसी प्रतिभा-कला से वे बहुमुखी कलाकार बने रहे।

राजस्थान संगीत नाटक अकादमी ने उनकी दीर्घकालीन संगीत साधना के फलस्वरूप उन्हें 'कलापुरोधा' सम्मान प्रदान किया। लक्ष्मीनारायण ने न्यू भूपालपुरा के सेंट्रल पब्लिक सेकण्डरी स्कूल में नृत्य के लखनऊ जयपुर एवं बनारस घराने का कत्थक प्रशिक्षण भी दिया। लक्ष्मीनारायण ने सन् 1953 में महाराणा भूपालसिंह के सम्मुख मीरांबाई के भजन सुनाये तब महाराणा ने उन्हें 150 चांदी के कलदार भेंट किये।

एकबार उनसे मेरी भेंट 4 मई 2009 को उनके निवास पर हुई। उन्होंने बताया कि वे सामरजी को कई जगह ले गये। एकबार झींतिया गांव में उनके साथ भवाइयों का खेल देखा। उसमें एक कलाकार ने जमीन पर बैठकर अपने पांवों से सिर पर चूड़ी उतार पांच कलश रखे। अंतिम कलशे पर गंगाजली और उस पर दीपक रखकर नृत्य किया। सामरजी उसे देखकर चकित रह गये। दयाराम को उन्हीं भवाई कलाकारों के साथ नाचते देखा तो उसे कलामंडल लाकर भवाई नृत्य में तराशा। एक तो उसकी लम्बाई ही साढ़े छह फीट की थी फिर मटके पर मटका रख अपनी ऊंचाई तक के चूड़ी चढ़ाव मटके पर मटके रख मंच पर जो चौकड़ी लगाता, देखने वालों के दिल दहल जाते। उस जैसे जादुई प्रभाव का अन्य कोई कलाकार उसके बाद नहीं हुआ। उसके लंबे बाल थे जिन पर बिना चूमली, ईडोणी के वह सिर पर मटकों का स्तंभ खड़ा करता।

दयाराम ने पूरे विश्व में भवाई नृत्य से कलामंडल का नाम रोशन किया। इसी प्रकार श्री राव कांकरवा से तेराताली करनेवाले कामड़दल को लाये। यह कलामंडल का प्रारंभिक काल था। उन्हीं दिनों रमादेवी का एक अच्छी सधी हुई नृत्यांगना के रूप में बड़ा बोलबाला था। उदयपुर में सूरजपोल के पास पीपलवाले नोहरे में उनका निवास था। रमाबेन का तलवारों का नाच बड़ा सराहनीय था। लकड़ी के सांचे में आठ धारदार तलवारों पर नाचना बड़ा टेढ़ा काम था। वे नाचते समय धार पर पांवों को बड़ी चतुराई से खींचे रखती। एकबार असावधानीवश उनके पांवों में घाव पड़ गये तब दारू की बाल्टी में कई दिनों तक अपने पांव रख दर्द से मुक्ति पाई।

राव ने बताया कि महाराणा जवानसिंह के समय ईश्वरजी राव हुए जो प्रतिदिन दोहे लिखकर ही अन्न ग्रहण करते थे। ईर्ष्यावश किसी के शिकायत करने पर महाराणा ने उन्हें जेल की सजा सुनाई किन्तु वहां भी उनका यही क्रम चलता रहा। उदयपुर पर उन्होंने 365 दोहे लिखे जो बड़े टकसाली कहे गये।

लक्ष्मीनारायण राव से मेरी अंतिम भेंट उनके निवास स्थल रामपुरा चौराहा स्थित बस्ती में 4 जनवरी 2011 को हुई। मेरे साथ कठपुतली कलाकार जयप्रकाश व्यास थे। उन दिनों लक्ष्मीनारायण श्वांस रोग से पीड़ित थे और शरीर से बहुत कमजोर तथा क्षीण हो गए थे लेकिन तब भी वे बड़ी हिम्मत और बुलंद हौंसले के थे। उन्होंने करीब आधे घंटे तक अपनी उपलब्धियों का बखान किया और कहा कि अब कलाकारों के पारखी नहीं रहे। सरकार की ओर से भी कलाकारों के प्रति उदासीनपूर्ण रवैया ही रहा। यह विडम्बना ही रही कि हमारी भेंट के ठीक एक माह बाद ही 4 फरवरी 2011 को उनका निधन हो गया।

अब सोने का समय नहीं : गणेशमुनि शास्त्री

राष्ट्रसंत गणेशमुनि एक ऐसे महिमावंत संत थे जिन्होंने अल्पायु में ही गृहस्थ जीवन का त्याग कर विराग धारण कर लिया। वे इसे अपना सौभाग्य मानते थे कि श्रमणसंघ के पूज्य उपाध्याय प्रवर पुष्कर मुनि का अंतिम समय तक उन्हें आध्यात्मिक सान्निध्य, अहर्निश आशीर्वाद, ममतामय मार्गदर्शन, ज्ञानदर्शन, चारित्र का गहन चिंतन तथा गवेषणामूलक अन्तर्दृष्टि प्राप्त हुई। आचार्य देवेन्द्र मुनि जैसे गुरुभाई को पाकर भी वे धन्य हुए। प्रवर्तक पद पर आसीन रहते हुए जैन एवं जैनेत्तर संत-महात्माओं, साधु-साध्वियों, धर्मगुरुओं, राजनीतिज्ञों, विद्वानों एवं समाजश्रेष्ठियों का जो आत्मीय स्नेह सौहार्द उन्हें मिलता रहा उसे उन्होंने अपनी धर्म-सम्पदा का समृद्ध सोपान माना।

साहित्य, संस्कृति, कला एवं सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के त्रिविध आयामों को लेकर विगत छह दशकाधिक से उन्होंने अपनी तत्वान्वेषी लेखनी से विपुल मात्रा में साहित्य सृजन किया। कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, हास्य, व्यंग्य, संस्मरण, प्रवचन आदि विधाओं में 350 से अधिक प्रकाशन उनके बहुमुखी

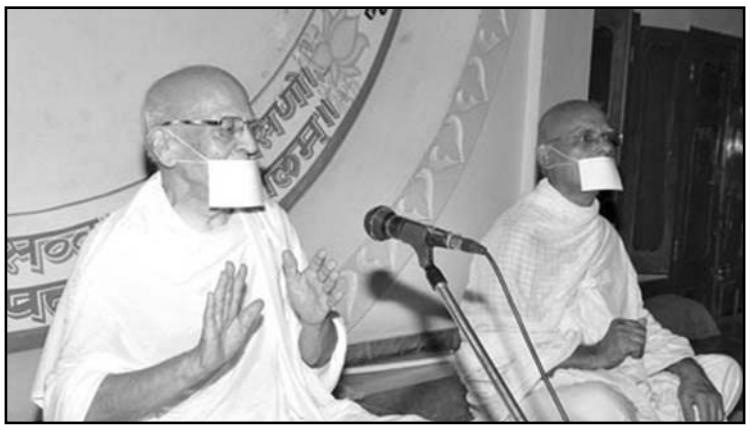

व्यक्तित्व एवं साधनाशील कृतित्व की विरासत हैं।

अपनी साधना के सत्पथ से उन्होंने राजस्थान के अतिरिक्त गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, दिल्ली आदि क्षेत्रों की पदयात्राओं, प्रवासों, चातुर्मासिक ठहरावों तथा विशिष्ट धार्मिक आयोजनों में अगणित जनों को धर्मबोध द्वारा संस्कारित किया। वंचित, पिछड़ों, दलितों, अंतिमों तथा आदिवासी जनजाति लोगों में धूम्रपान तथा नशामुक्ति का जीवन जीन की प्रेरणा सफल सिद्ध दी।

धर्म की उत्कृष्ट मंगलमुखी आराधना में अनुरक्त मुनिश्री ने जप, तप, ध्यान एवं योग की अतल गहराइयों से दिव्य अनुभूति तथा आत्मिक शक्ति संचित कर भक्त-श्रद्धालुओं तथा निष्ठावान श्रावकों की विघ्न बाधाएं, व्याधियां एवं विसंगतियां दूर कीं।

पिछले वर्ष-दो वर्ष से उनका स्वास्थ्य ठंडामंडा ही चल रहा था। अहमदाबाद और उदयपुर में उनका हर संभव श्रेष्ठ इलाज चलता रहा कि अचानक उन्हें डाक्टरों की देखरेख में गहन चिकित्सा इकाई में रखना पड़ा। रात करीब बारह बजे उन्होंने अपने पट्ट शिष्य उपप्रवर्तक जिनेन्द्र मुनि को बुलाया और कहा-' बेटा जाग रहा है या सो रहा है? अब सोने का समय नहीं, जागने का समय है।' जिनेन्द्र मुनि बोले- 'गुरुदेव! क्या आप मुझसे नाराज हैं?' इस पर गुरुदेव ने अपनी असीम स्नेह-दृष्टि से उन्हें निहारा। 'ना' के संकेत में सिर हिलाया और हृदय पर हाथ रख इशारा दिया कि उनका जी ठीक नहीं है। इसके दो दिन बाद गुरुदेव ने किसी से कोई बात नहीं की और देखते-देखते अनंत में विलीन हो गये।

गुरुदेव गणेशमुनिजी ने 29 नवम्बर 2015 को प्रात: उदयपुर में उनके द्वारा स्थापित अमर जैन साहित्य संस्थान में अंतिम स्वांस ली। हजारों भक्त-श्रावकों के उमड़ाव के साथ चित्रकूटनगर स्थित गुरु गणेश सेवा कल्पतरु धाम में उनका अंतिम संस्कार किया गया। उनके देवलोकगमन होने पर श्रमण संघ के आचार्य डॉ. शिवमुनि ने गणेशमुनि को ज्ञानवान संघरत्न बताया और कहा कि अपने चिंतन की गहन अनुभूतियों से उन्होंने संगठन तथा एकता पर अधिक बल देते हुए समय-समय पर समाज का सशक्त मार्गदर्शन किया।

युवाचार्य महेन्द्र ऋषि ने उनके तेजस्वी व्यक्तित्व, साहित्यिक कृतित्व तथा कवि हृदय को जन-जन का प्रेरक बताया। महामंत्री सौभाग्यमुनि 'कुमुद' ने बोझिल मन से जैनेन्द्र मुनि को लिखा- कैसे समझाऊं कि गुरु का वियोग कैसा होता है? इसे मैं झेल चुका हूं। एक माह तक तो किसी को मांगलिक भी नहीं दे पाया। वरिष्ठ प्रवर्तक रूपमुनि ने कहा- गणेशमुनि मेरे बाल मित्र थे। उन्होंने अपनी लेखनी से राष्ट्रीय पहचान बनाई और श्रमण संघ का गौरव बढ़ाया। गुरुदेव जब तक स्वस्थ रहे, अपने सृजन पक्ष को कभी शिथिल नहीं होने दिया। उनकी बहुत सारी पाण्डुलिपियां प्रकाशन की प्रतीक्षा लिए हैं। सच तो यह है कि उनके नहीं रहने से जैसे एक युग का अंत हो गया है।

खोज-खबर

पड़ चितेरे रामगोपाल जोशी

चित्तौड़ निवासी पड़ चित्रांकन के जानेमाने कलाकार रामगोपालजी जोशी से उनके निवास 40-ए, कुम्भानगर में 11 सितम्बर 2002 को भेंट कर बहुत सारी अजूबी जानकारियां प्राप्त करने का सुख मिला। जोशीजी ने बताया कि पड़ चित्रण का कार्य करने वाले जोशी चित्तौड़ के अलावा कपासन, पुर, शाहपुरा, रामपुरा, गंगापुर तथा भीलवाड़ा में बसे हुए हैं। मुख्य पड़ें तो पाबूजी, देवनारायणजी ; दो ही देवताओं की बनती आई हैं। देवनारायणजी की पड़ बड़ी तथा पाबूजी की पड़ छोटी होती है। पड़ के अलावा पंचांग बनाने में का कार्य करने में भी जोशी चितेरे दक्ष होते हैं। रामगोपालजी ने अपने पास रखे कपड़े पर बने दो पंचांग बताये। इनमें पहला संवत 1938 का सूरजमल चौथमल जोशी भीलवाड़ा का तथा दूसरा सं. 2000 का बना रामलाल नाथूलाल जोशी पुर, मेवाड़ का था।

रामगोपालजी ने बताया कि बारां निवासी ईश्वरीलाल जोशी बड़े जानकार भविष्यवक्ता थे। उनका बड़ा नाम था। एकबार कोटा दरबार उधर से निकले तब किसी ने ईश्वरीलालजी के सम्बंध में दरबार को कहा कि उन्होंने कइयों की भविष्यवाणी की जो सही निकली। ऐसी प्रशंसा सुन दरबार भी उनके पास पहुंचे। जोशीजी ने दरबार से कहा कि वे जो कुछ लिखकर दें, उसे दरबार महल में जाकर ही खोलें, पढ़ें। जोशीजी ने लिख दिया कि दरबार परकोटा लांघकर महल में प्रवेश करेंगे। बंद लिफाफा दरबार ने अपने पास रख लिया।

वहां से प्रस्थान करते समय दरबार को विचार आया कि इस रुक्के में ज्योतिषी ने महल प्रवेश करने के चार दरवाजों में किसी एक से प्रवेश करने को लिखा होगा पर वह कौनसा होगा, पता नहीं। ज्योतिषीजी की भविष्यवाणी झूठी करने का मन बना दरबार ने किसी भी दरवाजे से प्रवेश नहीं कर परकोटा तुड़वाकर भीतर प्रवेश किया। प्रवेश करने के उपरान्त महल में जाकर लिफाफा खोला तो परकोटे की एक दीवाल तुड़वाकर उससे प्रवेश करना लिख देख आश्चर्य में पड़ गये। उन्होंने दर्जी को बुलाकर ज्योतिषीजी के लिए पोशाक सिलावाई और बग्घीवाले के साथ उस पोशाक को पहन जोशीजी को दरबार हाजिर होने को कहा। ईश्वरीलाल दरबार के समक्ष उपस्थित हुए। दरबार ने उन्हें तीन बीघा जमीन का पट्टा दे सम्मान के साथ विदा किया। बारां में वे ब्राह्मणों के मोहल्ले में रहते थे। रामगोपालजी ने बताया कि जोशीजी के पोतों के पास ज्योतिष सम्बंधी किताबों का अच्छा संग्रह है जो सुरक्षित कर रखा है। उन्होंने उस अलभ्य संग्रह को देखा था।

रामगोपालजी ने एक और घटना सुनाई। उनके अनुसार मालवा के नागदा के पास आलोट गांव में कालेश्वर मंदिर है जहां नागेश्वर मेला लगता है। इसमें भोपे को नाग देवता आते हैं। भोपा नाग काटे का जहर चूस रोगी को चंगा करता है। एकबार कुछ मनचलों ने एक व्यक्ति को दांतली के दो-तीन घाव कर मंदिर ले जाकर सुला दिया। वे देवता की, भोपे की परीक्षा लेना चाहते थे कि उनमें कितनी सच्चाई है।

देवता की चौकी लगी। भोपे ने उसे देख कहा कि इसे चलता करो। यहां से उठाओ। मनचलों ने जवाब दिया, अन्दाता यह बीमार है, इसे ठीक करो। इसे सर्प ने काट खाया है। भोपा बोला, रोळां (मजाक) मत करो। यह तो ठीक ही है। किसी ने इसे नहीं काटा। इस पर भी वे मनचले नहीं माने तब बावजी को गुस्सा आया। उन्होंने वहां रखी दांतली का बांसा लिया। देखते-देखते उस बांसे से एक बेंत भर का सांप निकला जो देखते-देखते बढ़ता रहा। उसने उस सोये व्यक्ति को जोर से डसा जिस कारण उसकी वहीं मृत्यु हो गई।

तीसरी घटना जोशीजी ने और सुनाई। कहा कि देवली से आगे बूंदी के रास्ते भैरुजी का एक देवरा है जो बड़ा चमत्कारी है। वहां भोपे के डील में देवता इतने आकरे आते हैं कि बाद में भोपाजी निढ़ाल हो पड़े रहते हैं। रविवार को चौकी लगी। सभी जातरु पूछताछ कर चले गये। भोपा देवरे बैठा हुआ था। इतने में मेवाड़ के महाराणा शंभूसिंहजी का उधर पधारना हुआ। लोगों ने उन्हें उस देवरे के चमत्कार सम्बंधी बातें बताई। महाराणा तब वहां पहुंचे।

भोपे को भाव लाने को कहा गया पर भोपे ने यह कह भाव लाने को मना कर दिया कि भैरुजी पधार चुके हैं, अब उनका पुन: पधारना नहीं होगा। महाराणा भैरुजी के चमत्कार को प्रत्यक्ष देखना चाहते थे। साथ वालों ने भोपे से बार-बार कहा पर भोपा मना ही करता रहा। जब भोपे को बाध्य किया गया तो बे मन से, मजबूरी से भोपा तैयार हुआ। भैरुजी बावजी ने बड़े आकरे रूप में भोपे के डील में आकर हाक दी। यह हाक इतनी जोर की थी कि मंदिर का ऊपरी हिस्सा तड़क खा गया। इतने में जोर की तमतमाती हुई बीजली प्रकट हुई। देखा तो भोपा मृत्युगामी हो गया।

महाराणा को भोपे की मृत्यु का बड़ा दुख हुआ साथ ही भैरुजी के चमत्कार के प्रभाव को देख वे उनकी चमत्कारिक शक्ति के कायल बन गये। महल पहुंच महाराणा ने भोपे-परिवार के लिए एक सौ बीघा जमीन का पट्टा बख्शीश कर भैरुजी और भोपे के प्रति अपनी आत्मनिष्ठा व्यक्त की।-**म.**

नाव घाट की गायिकाएं

उदयपुर निवासी वाणीकार स्वरूप व्यास ने मुम्बई फिल्म्स डिवीजन में रह पांच हजार से अधिक डोक्युमेन्ट्री फिल्मों में अपनी वाणी का वैभव दिया। उनकी वाणी का प्रभाव पं. नेहरू, वल्लभभाई पटेल, लता मंगेशकर, पृथ्वीराज कपूर जैसी हस्तियों पर भी असरकारी रहा।

31 अगस्त 1976 को लोककला मण्डल में उन्होंने बताया कि एक दिन बम्बई में लता मंगेशकर के अपने संग्रह से लच्छूबाई के गाये गीतों की रेकार्ड सुनाई जिसका यह बोल सुन दोनों भाव विह्वल हो गये- राणाजी म्हूं तो कइयन मांगूं / सोनो नी मांगूं, रूपो नीं मांगूं / मांगूं नी मोत्यां रो हार / पीछोला रो पाणी मांगूं/ उदियापुर रो वास / म्हारा अंदाता, म्हूं तो कइयन मांगूं / राखोनी गोरी रो मान म्हारा अन्दाता.....। उन्होंने लताजी से यह भी सुना कि लच्छूबाई के यह गीत गाते समय किसी ने उसके गले में सोने का हार डाल दिया।

तीन सितम्बर 1976 को उदयपुर में महलों के एक बाजु पीछोला झील के किनारे बसे नाव घाट नामक बस्ती में मैं कलामण्डल की गायिका नारायणीबाई के निवास पर लच्छूबाई से मिला। उन्होंने बताया कि दरबार भूपालसिंहजी ने जीतांबाई, सिणगारीबाई, भोलीबाई, कजोड़ीबाई, हगामीबाई, मोहनीबाई के गानों की रेकार्डें बनवाई। इन गायिकाओं का कोई उस्ताद नहीं था। विरासत में ही इन्हें गायक परिवार का गला मिला। दरबार प्राय: शिकार में पधारते तब इन्हें याद किया जाता। लच्छूबाई तब शिकार के गीत सुनाती। दरबार बड़े खुश होते। इनाम भी बख्शते। गीतों के कड़ावे थे-

(अ) सुअरिया रे धीमो मधरो चाल

(ब) मगरो छोड़ दे वन का राजा मार्‌यो जाय रे, मगरो छोड़ दे। पातलिया परताबसिंहजी नत की लादे भार रे। खबरां सुणे फतेसिंहजी वेगा पधारो रे मगरो छोड़ दे।

इनके अलावा लच्छूबाई मांडें भी गातीं। भूपालसिंहजी अन्दाता की भावनाएं भी गातीं जो माजीसा (रानीसा) ने बनाई। एकबार मारवाड़ के मेहमान पधारे तब लच्छूबाई गाने के लिए बुलाई। गाना सुन दरबार और मेहमान बड़े खुश हुए। दरबार ने उन्हें दिल्ली भेजी तब उनके पुत्र भगवानदास वर्मा, जो आगे जाकर कत्थक नृत्य में बड़े नामधारी बने, 15-16 वर्ष के थे। यह बात 40 वर्ष पुरानी बताई। दिल्ली में लगभग 20 गाने रेकार्ड करवाये। दरबार ने अच्छा इनाम दिया। घूघरीवाली सोने की चूड़ियां बगसाई तब सोना पहनना वर्जित था। लच्छूबाई सब उछब पर जाती। गणगौर पर घूमर गाती। कजोड़ी, हगामी, मोहनी की अच्छी जोड़ी थी। दरबार ने इनको बम्बई भेजी जहां रेकार्डें भरवाई। लच्छूबाई से ये पहले हुई।

लच्छूबाई ने बताया कि वे प्रतिदिन जगदीश मंदिर जाकर भजन कीर्तन करती हैं। संध्या को चार-चार घंटे और भी बाइयां आ जाती हैं। बड़ा ठाठ रहता है। लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत भी 8-10 माह पहले उनसे मिलने आई, गाने लिखकर ले गई।

इसी परम्परा में फत्तीबाई और रतनप्रभा बड़ी नामचीन गायिकाएं हुईं। देवीलाल सामर ने जब 1952 में भारतीय लोककला मण्डल की स्थापना की तो रतनप्रभा की सेवाएं लीं। उनकी गायकी का मधुरकंठी स्वर जहां-जहां कलामंडल ने देशव्यापी प्रदर्शन दिये, वहां-वहां कलामंडल की प्रतिष्ठा में चारचांद लगे। पहलीबार इस गायक घराने से रतनप्रभा को आकाशवाणी वालों ने सराहा और इन्दौर तथा जयपुर केन्द्रों द्वारा उनके गीतों का प्रसारण किया तो श्रोता समुदाय लट्टू हो गया। इसके बाद नारायणीबाई तथा जानकीबाई की सेवायें ली गईं जो अंतिम समय तक रहीं। कला मण्डल की प्रदर्शनधर्मी यात्राओं में इन्होंने न केवल पूरे देश में अपितु विदेश में भी अपनी गायकी का स्वर-माधुर्य दिया। रतनप्रभा के तीनों भाई मथुराप्रसाद, बद्रीप्रसाद तथा जगन्नाथप्रसाद ने संगीत क्षेत्र की महती सेवाएं कीं। मथुराप्रसाद ने कत्थक जगत में बड़ा नाम कमाया। रतनप्रभा की बड़ी पुत्री शकुन्तला पंवार ने कलामंडल में रह देश-विदेश में बड़ा नाम कमाया। मुख्य लोकनर्तिका के रूप में कलामंडल के नृत्यों, नृत्यनाटिकाओं तथा कठपुतली प्रदर्शनों में लीक से हटकर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। वहां से सेवानिवृत्ति के बाद श्रीमती शकुन्तला ने अपनी निजी संस्था 'शाकुन्तलम' की स्थापना की तथा सैकड़ों छात्राओं, महिलाओं तथा विदेशियों को लोकनृत्यों में प्रशिक्षित किया। बड़े-बड़े शहरों में वे आज भी बखूबी शिविरों के माध्यम से इस कार्य को सफलतापूर्वक अंजाम दे रही हैं। -**भा.**

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 15 दिसम्बर 2016

सम्पादकीय

कब होगा डाक विभाग स्मार्ट

भारतीय डाक विभाग लम्बे अर्से से नोटबंदी के फलस्वरूप बैंकों और एटीएमों के सामने लगी लम्बी लाइन की तरह लग रहा है। आशा अमर धन है और आश्वासन उससे भी अधिक लुभावना लगकर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त लिखित भारतमाता वन्दना की पंक्तियां- 'जय-जय भारत माता' कहने का गौरव लिए जनता उम्मीदों के आशियाने के नीचे कब मुझे मेरे घर मेरी चिट्ठी मिलेगी का भाव लिए प्रतिक्षातुर है।

स्मार्टसिटी उदयपुर में स्थानीय डाक भी यदि दस-पन्द्रह दिनों में मिल जाती है तो सर्दी की खुराक सीताफल, पिंडखजूर या फिर तिलपपड़ी खाने को मन खुश किया जाता है। शहर बढ़ रहा है। कॉलोनियां बढ़ रही हैं। आबादी बढ़ रही है। मॉल और कॉम्प्लेक्स बढ़ रहे हैं मगर डाकिये लगातार घट रहे हैं। कुरियर सर्विसेज और अन्य साधन बढ़ते जा रहे हैं मगर डाक की गति 'भारत के सम भारत' बनी हुई है।

लोग कहते हैं कि, समस्याओं का निराकरण किसी दादाजी या दादीजी के पास नहीं है। केवल मोदीजी के पास है। मोदीजी सबकी सुन रहे हैं। समझ रहे हैं और समाधान दे रहे हैं सो स्तुत्य है। यूं साधारण जनता का कभी कोई धणीधोरी नहीं रहा। एक कहानी याद आ रही है प्रश्नोत्तर रूप में, आप भी उसका मजा लीजिए-

तालाब की पाल पर कुम्हारों ने मटके औंधे रखे। आती-जाती गायें उन्हें फोड़ने लगी। क्यों गायें, मटके क्यों फोड़ रही हो? ग्वाला चराता नहीं है। क्यों ग्वाले, क्यों नहीं चराते हो? गो-स्वामी रोटी नहीं देता है। क्यों भाई, रोटी क्यों नहीं देते हो? घट्टी नहीं चलती है। क्यों घट्टी, क्यों नहीं चलती हो? मेहमान ऊपर बैठे हैं। क्यों मेहमान भाई, घट्टी पर क्यों बैठे हो? बरसात आ रही है। क्यों बरसात, क्यों बरस रही हो? मोर बोल रहे हैं। क्यों मोर, क्यों बोल रहे हो? बोलेंगे क्यों नहीं, हमारे दादाजी का देश है। यह कहानी है। मोर तब भी अकड़ में था। आज तो वह राष्ट्रीय पक्षी बना हुआ है।

अखिल भारतीय श्वान महासम्मेलन

-डॉ. देवेन्द्र इन्देश-

हम देश के कुत्ते हैं और हम भौंकते रहते हैं। सारी सृष्टि में भौंकने तथा पूंछ हिलाने से ही पहचाने जाते हैं। निरन्तर भौंकना तथा पूंछ हिलाना हमने अपना कर्म बना लिया है। अब तक हम भौंकने को अपना जन्म सिद्ध अधिकार मान कर भौंक रहे थे। अब समय बदल गया है। लोग अब हमारे भौंकने से डरते नहीं हैं, अपितु हमारे ऊपर पत्थर फैंकते हैं। सरकार इंसान पर पूंछ हिलाने का प्रतिबंध लगाए।

जी हां, हम देश के कुत्ते हैं और हम भौंकते रहते हैं। आते-जाते लोगों पर भौंकना हमारा स्वभाव है तथा पूंछ हिलाना हमारा धर्म। सारी सृष्टि में भौंकने तथा पूंछ हिलाने से ही पहचाने जाते हैं। निरन्तर भौंकना तथा पूंछ हिलाना हमने अपना कर्म बना लिया है। हम भौंकेंगे भी और पूंछ भी हिलायेंगे। अगर हम भौंकना बंद कर दें तो लोग हमें कुत्ता मानना ही छोड़ दें। अब तक हम भौंकने को अपना जन्म सिद्ध अधिकार मान कर भौंक रहे थे। क्योंकि भगवान ने हमें कुत्ता बनाकर यह नायाब हुनर दिया है।

पर चिन्तनीय एवं विचारणीय विषय यह है कि कब तक हम कुत्ता बने रहेंगे और दूसरों को भौंक कर डराते रहेंगे? अब समय बदल गया है। लोग अब हमारे भौंकने से डरते नहीं हैं, अपितु हमारे ऊपर पत्थर फैंकते हैं। कभी-कभी तो ऐसा अवसर भी आता है कि हम भौंकते भी नहीं हैं, फिर भी लोग हमारे ऊपर पत्थर फैंक कर भाग जाते हैं। जैसे-तैसे छिपकर हमें अपने प्राण बचाने पड़ते हैं। यह हमारी जाति पर सरासर अन्याय है। कानून भी कोई चीज होती है। जब हम भौंकते ही नहीं हैं तो हम पर पत्थर क्यों उलीचे जाते हैं। आखिर हम भी देश के कुत्ते हैं और हमें भी जीने का अधिकार है। इसलिए देश के सभी कुत्ते गांधी चौक पर इकट्ठे होकर अपनी मांगों के समर्थन में अखिल भारतीय श्वान महासम्मेलन का आयोजन कर रहे हैं।

हमें मालूम है कि मनुष्य जब कोई सभा या सम्मेलन करता है तो वह गांधी चौक पर ही करता है। उस समय जब हम सब यहां चहलकदमी करते थे तो इंसान हमें दुत्कार कर भगा देता था लेकिन हम भी कम नहीं थे। दुत्कारने के बाद भी उनकी सभा के आस-पास मंडराते रहते थे। जब इंसान की ज्यादतियां हम पर अधिक हो जाती थीं, तो हम उनके बैनर फाड़ कर भाग जाते थे।

व्यंग्य

हमें डर है कि इंसान हमसे कहीं बदला ना ले, क्योंकि इंसान बदला लेने में माहिर होता है। इसलिए हमारी श्वान महासभा ने यह तय किया है कि हम अपनी सभा के आस-पास किसी भी इंसान को फटकने नहीं देंगे लेकिन हम यह भी जानते हैं कि इंसान नाम का जीव बिना बुलाए कहीं भी पहुंच जाता है और अपनी टांग अड़ा बिन मांगे राय देने लगता है।

अपने सम्मेलन में कुछ मुद्दे ऐसे उठाये जाएंगे, जो हमारी अस्मिता से जुड़े हुए हैं। हमें हर हाल में अपनी अस्मिता की रक्षा करनी है। पहला मुद्दा तो यही है कि हमारे भौंकने के मूलभूत अधिकार पर कोई अतिक्रमण न करे। नेता बने आदमी कई बार एक-दूसरे पर ऐसे भौंकते हैं कि हम भी लज्जित हो जाते हैं। लगता है जैसे वे भौंकते हैं, वैसे तो हम भी नहीं भौंक पाते। अब आप भी बताइये, जब ये लोग हमारी तरह भौंकेंगे तो हम क्या झुनझुना बजायेंगे।

अत: इंसानों को पाबंद किया जाए कि वे हमारी तरह एक-दूसरे पर ना भौंके कारण कि भौंकने का अधिकार केवल हमें है। अगर वे हमारी तरह ही भौंकते रहे तो फिर हममें और इंसानों में क्या फर्क रह जाएगा। अगर इंसानों के भौंकने का यही हाल रहा तो उनकी गिनती हमारे में होती लगेगी पर हम तो मनुष्य नहीं बन पायेंगे चाहे हमारी बिरादरी कितनी शालीन क्यों न बन जाये।

दूसरा मुद्दा पूंछ हिलाने का है। कुदरत ने हमें सबके सामने पूंछ हिलाने का हुनर दिया है। यह हमारे लिए वरदान है। यों भौंकना और पूंछ हिलाना ही तो हमारी पहचान है पर यह अधिकार भी इंसान ने हमसे छीन लिया है। अक्सर देखा जाता है कि इंसान बिना पूंछ के ही पूंछ हिलाता है। यह पूंछ भी वह इतने तरीके से हिलाता है कि हमें भी लज्जित हो जाना पड़ता है।

इसलिए सरकार इंसान पर पूंछ हिलाने का प्रतिबंध लगाए। हम जानते हैं कि सरकार हमारे मुद्दों पर विचार नहीं करेगी, क्योंकि सरकार भी तो इंसानों की ही है।

नॉन-आयोनाइजिंग रेडिएशन मानव स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक और खतरनाक नहीं

उदयपुर। संचार मंत्रालय के मार्गदर्शन में इलेक्ट्रॉमैग्नेटिक फील्ड (ईएमएफ) उत्सर्जन और मोबाइल टावरों के बारे में एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह 'डिजिटल इंडिया' पहल को सुगम बनाने के लिए चलाए जा रहे राष्ट्रव्यापी अभियान कार्यक्रम का हिस्सा है। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि संचार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) मनोज सिन्हा, राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव ओ पी मीना, दूरसंचार विभाग के सचिव जे एस दीपक, राजस्थान सरकार में उद्योग मंत्री राजपालसिंह शेखावत सहित स्वास्थ्य मंत्रालय के सलाहकार और चिकित्सा विश्लेषक तथा आईआईटी-बॉम्बे के प्रोफेसर शामिल थे।

मुख्य सचिव ओ पी मीना ने कहा कि मोबाइल टावरों से निकलने वाली नॉन-आयोनाइजिंग रेडिएशन मानव स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक अथवा खतरनाक नहीं है। पैनल द्वारा पाया गया कि मोबाइल टावरों से निकलने वाले उत्सर्जन और मानव रोगों के बीच कोई संबंध नहीं है। उन्होंने कहा कि देश को प्रगति की राह पर ले जाने के लिए एक उपयुक्त पारिस्थितिकी तंत्र जरूरी है और इसके लिए टावरों से जुड़ी भ्रांतियों को दूर कर वैज्ञानिक प्रवृत्ति को लगातार प्रोत्साहित करना होगा।

दूरसंचार अयुक्त जे एस दीपक ने कहा कि हम नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं और मोबाइल टावरों से निकलने वाली इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडिएशन के लिए दूरसंचार विभाग द्वारा निर्धारित मानक आईसीएनआईआरपी और डब्ल्यूएचओ द्वारा तय अंतर्राष्ट्रीय मानकों की तुलना में 10 गुना सख्त हैं। भारत सरकार ने यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त कदम उठाए हैं कि दूरसंचार सेवा प्रदाता (टीएसपी) इन मानकों का सख्ती से पालन करें। डीडीजी डॉ. आर एम चतुर्वेदी ने कहा कि 30 साल के शोध और दुनियाभर में किए गए 25,000 अध्ययनों तथा 50 से अधिक राष्ट्रीय प्राधिकरणों और 8 अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा की गई गहन शोध के बावजूद कोई सबूत नहीं मिला कि लो लेवल इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड्स मानव स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक है। यही नहीं इलाहाबाद उच्च न्यायालय के आदेश पर गठित पांच आईआईटी और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टॉक्सीकोलोजी रिसर्च, लखनऊ के विशेषज्ञों वाली समिति ने भी यह पाया कि मोबाइल बीटीएस टावर से निकलने वाली ईएमएफ रेडिएशन के खतरे का कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

ईएमएफ रेडिएशन के इस महत्वपूर्ण पहलू पर जयपुर में डिपार्टमेंट ऑफ रेडियोलॉजिकल फिजिक्स के प्रोफेसर डॉ. अरुण चोगुले ने कहा कि मोबाइल टावरों से निकलने वाली रेडिएशन सुरक्षित सीमा में हैं और इसका मानव स्वास्थ्य पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है।

पत्र-पिटारी

साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा ऐतिहासिक सामग्री से युक्त 'शब्द रंजन' अन्य पत्र-पत्रिकाओं से हटकर अपनी एक अलग पहचान बना रहा है। साहित्य मनीषियों के साक्षात्कार न केवल रोचक होते हैं, बल्कि अन्तरंगता से भरे हुए होते हैं, जो एक आत्मीय भाव पैदा करते हैं।

-डॉ. देवेन्द्र इन्देश, उदयपुर

'शब्द रंजन' बड़ी सूझबूझ और पैनी पकड़ से संवारा जा रहा है। कई तरह की सामग्री पाठकों को प्रबुद्ध सोच तथा समझ से विकसित किये रखती है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए जैसे विविध रूपा खाद्य सामग्री अपेक्षित है, उसी प्रकार मस्तिष्क को तरोताजा रखने के लिए 'शब्द रंजन' जरूरी है।

-ओंकारेश्वर, इन्दौर

'शब्द रंजन' पाक्षिक के अंक मिल रहे हैं। अंक 20 में प्रभाकर माचवे और श्याम परमार का प्रसंग था भूली बिसरी स्मृतियां ताजा हो गईं। माचवे और श्याम परमार ने 'संप्रेषण' को बड़ा सहयोग दिया था। तृतीय और चौथी एफ्रो-एशियन कान्फ्रेन्स में माचवे मेरे साथ मेरी बगल में ही बैठे थे और रेखाचित्र बनाने में लगे थे। बहुत अच्छा लगा।

-प्रो. चन्द्रभानु भारद्वाज, जयपुर

'शब्द रंजन' में जिस सामग्री की कल्पना नहीं बनती, उसका प्रकाशन अद्भुत लगता है। आप साहित्य के बढ़ते व्यर्थ के दबावों और नाटकीय सम्मानों से दूर रहकर मानवीय पक्षों से जुड़ी जो सामग्री दे रहे हैं उससे भटकाव से हट पुन: अपनी जड़ों की ओर लौटने का साहस बनता है और यही भारतीयता की, अपनत्व की, मनुजता की सच्ची पहचान भी बनती है। बधाई।

-विष्णुदत्त, जबलपुर

आदिवासियों के धार्मिक सरोकार

-अश्विनी कुमार आलोक-

परंपराएं इतिहास की ओर जाती हैं तो भविष्य की संभावनाओं से भी संवाद करती हैं। इनके अध्ययन में मनोयोग और समर्पण के सातत्य की निष्ठा का संयोग होता है। संस्कृति और समाज के घनिष्ठ स्वरूपों को सिर्फ पूर्णकालिक लेखकों की अवधारणाओं अर्थात् उनकी लिखी पुस्तकों से नहीं समझा जा सकता। संदर्भ के रूप में उन्हें सामने रखा जा सकता है। वे पुस्तकें आधार और दिशा दे सकती हैं पर समग्र रूप से न तो अध्ययन की पद्धति प्रदान कर सकती है और न ही अध्ययनकर्ता के मौलिक निर्णयों का उद्घाटन ही कर सकती हैं। इसके लिए आवश्यक है कि अध्ययनकर्ता उस विषय-संस्कृति के निकट आत्मीय भाव से पहुंचे और समय तथा श्रमसाध्य सूक्ष्मता के साथ अवलोकन-अध्ययन करे।

लोकसंस्कृति का अध्ययन सिर्फ संदर्भ पुस्तकों के निर्णय-विनिमय की वस्तु नहीं अपितु क्षेत्रीय भ्रमण के व्यापकत्व का आग्रही है। इस विशिष्ट पद्धति को अपनाकर इस देश के कई अध्येताओं ने समर्पण भाव से उल्लेखनीय कार्य किये हैं। डॉ. महेन्द्र भानावत उनमें से प्रमुख हैं। लोकसंस्कृति और साहित्य के अर्थगांभीर्य को उदारतापूर्वक समझने और सघनतापूर्वक अभिव्यक्त करने का उन्हें श्रेय जाता है।

उनकी पुस्तकें उनकी विषयनिष्ठ एकाग्रता को प्रमाणित करती हैं वहीं देश की पांच सौ से ऊपर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके महत्वपूर्ण आलेख साहित्य-संस्कृति के विषय वैविध्य की ओर हमारा ध्यान केन्द्रित करते हैं। डॉ. भानावत ने जिन पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया, उनमें संपादक के रूप में उनकी अंतर्दृष्टि भिन्न रही। वह सिर्फ लिखित सामग्री के प्रस्तोता-प्रकाशक नहीं रहे, उपपतियों के संयोजक और निर्णयों के अनुयोजक भी रहे।

उनके संपादन में प्रकाशित रंगायन, लोककला, पर्यटन, दिग्दर्शन, शोध पत्रिका, पीछोला, रंगयोग और सुलगते प्रश्न जैसी पत्रिकाएं शोध के विस्तृत प्रभाव का नियमन करती रहीं तो लोककलाओं का आजादीकरण, अजूबा भारत, भारतीय लोकमाध्यम, लोकनाट्य गवरी, लोकरंग, गेहरो फूल गुलाब रो, लोकनाट्य : परंपरा और प्रवृत्तियां, लोककला : मूल्य और संदर्भ, राजस्थान की संझ्या, राजस्थान के थापे, राजस्थान के मांडणे, राजस्थान की गणगौर, लोककला : प्रयोग और प्रस्तुति, संस्कृति के रंग, जिन्हें में जानता हूं, रंग रूड़ो राजस्थान, कुंवारे देश के आदिवासी, उदयपुर के आदिवासी, निर्भय मीरां, पाबूजी की पड़, कविराव मोहनसिंह, गुजरात के लोकनृत्य, राजस्थान के लोक देवी-देवता जैसी आठ दर्जन पुस्तकें उनके अध्ययन-विस्तार को प्रकट करती हैं।

डॉ. महेन्द्र भानावत उन अध्येताओं में से नहीं हैं, जिन्होंने एक ही विषय के लिए एक प्रकार की मान्यता उद्धरित कीं। उनकी पुस्तकें अपने मान्यता-वैविध्य के लिए भी पहचानी जाती हैं। आदिवासियों के निहित जीवन, उनकी शैली और बदलते समय में उनके बदलाव की ओर उनका ध्यान गया है तो समाज के अभिजात्य, कुलीन एवं विकसित पक्षों का उन्होंने तुलनात्मक अध्ययन किया है।

इस दृष्टि से उनकी पुस्तक 'जनजातियों के धार्मिक सरोकार' धार्मिकता के कई मानदण्डों, सिद्धांतों एवं व्यावहारिक पक्षों की ओर ध्यान आकृष्ट कराती है। वस्तुत: धार्मिकता जैविक आवश्यकताओं से उपजती है।

सभी अर्थों में जीवन और जैविक आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिया जाना चाहिये। डॉ. भानावत ने धार्मिकता के उद्भव का अध्ययन किया है एवं उसके विकास की क्रमशील प्रवृत्तियों पर गंभीरता से अपने मत प्रस्तुत किये हैं। पुस्तक के सात अध्यायों में से पहला अध्याय 'धर्म की अवधारणा और समाज' में धर्म मनुष्य की परवशता की ओर संकेत करता है। अपने जीवन का अनुकूलन तलाशते मनुष्य के जीवनानुभव उसे बार-बार शिक्षित-प्रशिक्षित करते हैं। कई बार अपनी आवश्यकताएं उसका पीछा करती हैं। वह आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तत्पर रहता है। आविष्कार करता है और अपने आविष्कारों के उपयोग से जीवन सुलभ करना चाहता है। अपनी तरह के अन्य सहजीवियों के साथ मिलकर वह आवश्यकताओं की संपूर्ति के लिए समाज रचता है। समाज के लिए मान्यताएं सृजित करता है और मान्यताओं की प्रतिबद्धता के लिए कड़े एवं लचीले नियम बनाता है।

मनुष्य विवश नहीं होना चाहता, परवश नहीं होना चाहता है परन्तु पूर्वजों की मान्यताएं उसे विवश और परवश कर सकती हैं। यह सामाजिक सिद्धांत बहुत धीर-धीरे बदलता है। बहुत बार बदलने की प्रवृत्ति में होता भी नहीं। अभिजन समाज इस सिद्धांत के प्रति विद्रोह करते हुए विकासशीलता के तर्क के साथ नई संस्कृतियों और मूल्यों को संधारित करता है जबकि जनजातीय समाज इस प्रकार के सिद्धांतों के प्रति आदर एवं समर्पण व्यक्त करता है।

जनजाति समाज प्रकृतिजीवी है। प्रकृति पर आश्रित है और प्रकृति की ओर अनिवार्य रूप से अपनी अधिकांश आवश्यकताओं के लिए देखता रहता है। प्रकृति के आश्रय में रहने के कारण प्राकृतिक विपदाओं के निवारण के लिए कृत्रिम प्रयास भी कम ही कर पाता है। प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली क्षति का भी इस समाज पर बड़ा असर पड़ता है परन्तु इस प्रकार की आपदाओं से निजाद पाने के लिए यह समाज प्राकृतिक उपाय ही खोजता है। प्रकृति के प्रति डर उसमें श्रद्धा और आस्था का भी बीज बोता है। ऐसे में जानजातीय समुदाय में धर्म और देवता की अवधारणा का विकास होता है। भानावतजी कहते हैं कि निश्चय ही व्यक्ति की यह समझ धर्म और धर्म के मूल में देववाद के विकास का आधार रही है।

जनजातियों की इन धार्मिक अवधारणओं को वैदिक और उपनिषदिक सिद्धांतों से दूर नहीं कहा जा सकता। संपूर्ण विश्व की धार्मिक मान्यताओं का यही आधार है। एक परम् शक्ति, एक परम् तत्व एवं एक परम् शासन के प्रति विश्वास का जैविक आधार एक डर है, जिससे जनजातीय ही नहीं, सभ्य समाज भी उबर नहीं पाया। डॉ. भानावत ने धार्मिक संस्कारों, क्रियाकलापों, कथा-वार्ताओं, पूजन-विधानों आदि की जड़ में इस डर, विश्वास और श्रद्धा को उद्धृत करते हुए सगुन, सगुण-साकार, निर्गुण-निराकार नामक तीन परिकल्पनाओं की व्यापक व्याख्या की है।

उन्होंने धर्म को जन समुदाय के विश्वास, जन समुदाय की अनुभूत भावनाएं, सामुदायिक क्रियाएं एवं संस्कार शक्ति की साकार-निराकार सत्ता की स्थापना जैसे चार स्तंभों पर देखा है। आत्मावाद या जीववाद, जीवित सत्तावाद या मानववाद, प्रकृतिवाद, धर्म का सामाजिक सिद्धांत, प्रकार्यवादी सिद्धांत जैसे पांच सिद्धांतों पर विद्वानों के मतों की व्याख्या करते हुए उन्होंने जनजातियों के धार्मिक सरोकारों को इनके निकट बताया है। टायलर के आत्मावाद से संबंधित मृत्यु और स्वप्न संबंधी दो अनुभवों को उन्होंने इस प्रकार के सरोकार की नींव में माना है।

डॉ. भानावत का मानना है कि जनजातीय समुदाय श्रुति-परंपरा में रहा इसलिए उसका लिखित प्रमाण कम मिलता है। उन्होंने धार्मिक परंपराओं में वर्ण एवं ऋतु संबंधी मान्यताओं को जातिसूचक बताते हुए यह भी कहा है कि चार वर्णों के अतिरिक्त प्रारंभिक काल में कुछ अन्य व्यवसाय और शिल्प से संबंधित वर्ण भी थे जो धीरे-धीरे जातिसूचक मान लिये गये।

पुस्तक का दूसरा अध्याय 'धर्मशास्त्रों में जनजातियों के संदर्भ' में उन्होंने उन ग्रंथों को प्रतीकित किया है, जिनमें जनजातियों को गैर आर्य अथवा शूद्र के रूप में संबोधित किया है। उन्होंने उन राज्यविधानों की ओर संकेत किया है, जब शूद्रों अथवा जनजातियों को निकृष्ट समझते हुए राज्य के बाहर, अभिजन समुदाय से अलग रहने पर बाध्य किया जाता था। मनु, पराशर और अत्रि के वर्णनों का हवाला देते हुए उन्होंने निषद, आयोग व मेद, अंध्र, चूंचु, मुद्गु, छत्रा, पुकष, धिग्वर्ण, वेण, रजक, नट, बुरड़, कैवर्त, भिल्ल जैसी जनजातियों के संबंध में बताया है कि ये लोग अपने राज्य भी अलग रखते थे।

महाभारत में जन्म से पूज्य ब्राह्मणों को जन्म, वेद अध्ययन और तप से अन्य जातियों की तुलना में श्रेष्ठ बताया गया है, वहीं धर्मशास्त्रों में कीरातों को एक प्रकार का क्षत्रिय और पुलिंद के साथ म्लेच्छ उपशाखा में माना गया है। डॉ. भानावत ने सिद्ध किया कि म्लेच्छों, शूद्रों एवं जनजातियों को ब्राह्मणों के समान कर्म, पूजा-विधान आदि का अधिकार प्राप्त नहीं था। वे वैदिक क्रियाएं नहीं कर सकते थे किंतु कूप, तालाब, मंदिर, वाटिकाओं का निर्माण तथा ग्रहण आदि अवसरों पर भोजनदान कर सकते थे। जनजातीय समुदाय में कर्मकांडी जटिलता नहीं आने का यही कारण रहा। वे परंपराओं से धर्म की सीख लेते रहे।

'आदिवासियों में देव-आस्था के सोपान' नामक अध्याय में कई श्रुति-कथाओं से उपजे विश्वासों की विशद व्याख्या है। जनजातीय देवालयों (देवरे) के संबंध में उनकी मान्यता है- निश्चय ही देव स्थापत्य का विकास जनजातीय समुदाय ये अभिजात्य संस्कृति में हुआ और उसे मानवीय देह की भांति विकसित किया गया, जिसमें शिखर से लेकर पाढांत तक की संरचना मिलती है। उन्होंने इस प्रकार के देवालयों की बारह विशेषताएं निर्धारित की हैं। देवालयों के पूजाविधान अभिजनों के विधानों-कर्मकांडों से अलग हैं। उन्होंने कई धर्मों में जन्म, मृत्यु, स्वर्ग, नरक संबंधी मान्यताओं का जनजातीय समुदाय से साम्य बताया है।

'पितृपूजन से जुड़ा जनजाति समाज' नामक अध्याय में उन्होंने स्पष्ट किया कि पितृ, श्राद्ध जैसी परंपरा शास्त्र से अधिक प्रभावित है फिर भी पितरों को ब्रह्म, देव अथवा आस्था के केन्द्र मान लेने की परंपरा जनजातियों में रही है। उन्होंने इस प्रकार के विश्लेषण के लिए शास्त्रीय संदर्भ पुस्तकीय सिद्धांतों का अनुगमन नहीं किया, बलिक 26 नवंबर 2004 को कार्तिक पूर्णिमा पर रात्रि जागरण में सम्मिलित होकर प्रत्यक्षत: पूर्वजों के भावों का अध्ययन किया।

जनजातियों में जादू-टोने का अधिक महत्व है। यह धार्मिक सरोकारों के साथ-साथ व्यावसायिक उद्देश्यों से भी जुड़े रहे हैं। इस अध्याय में इस पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। लेखक ने सुगरी जादू को सकारात्मक अथवा परहितकारी और नुगरी को नकारात्मक अथवा बुरी शक्ति कहा है।

उन्होंने ज्योतिष शास्त्र और आदिवासी परंपरा की मान्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया है। गृह-नक्षत्र, वर्ष-फल, गर्भ या मेघ, वर्षा, रोहिणी, स्वाति और आषाढ़ी, तत्काल ओलावृष्टि, फूलों, फलों, भूकंप, नदी-नालों, आकाशीय वनस्पतियों, द्रव्यों, खंजन, पट्टों, अंगों समेत कुल अट्ठाइस प्रकार के जादुओं एवं अनेक मंत्रों पर उनकी प्रामाणिक दृष्टि परिलक्षित होती है।

छठे अध्याय में आदिवासियों के शकुन और विश्वास तथा सातवें में गवरी अनुष्ठान पर उनकी टिप्पणी व्यापक अर्थ देती है।

आदिवासियों का जीवन प्रकृतिगामी और उल्लास-मोहित है। उनकी धारणाएं भिन्न हैं और विकास के आधुनिक सोपान भी आदिम अथवा परंपरावादी हैं। डॉ. भानावत के सरोकार उनकी धर्मनीतियों, समुदाय-परंपराओं के समानांतर वेदों में वर्णित उत्कृष्ट जातियों के धर्म रहस्य को परीक्षित करना भी है। संस्कृति की संहिता का विलक्षण चित्रण आदिम समुदाय की जैविक प्रवृत्तियों का धर्म निरूपण है। पुस्तक समाजशास्त्रीय दृष्टि से तो उपयोगी है ही एक सामाजिक की सहजीवी सहिष्णुता के दायित्व-बोध का भी पुख्ता परिशीलन है।

'झालावाड़ राज्य का इतिहास' पुस्तक लोकार्पित

झालावाड़ में इतिहासविद् ललित शर्मा लिखित 'झालावाड़ राज्य का इतिहास' पुस्तक का विमोचन पर्यटन विकास समिति झालावाड़ द्वारा पृथ्वी विलास पैलेस में किया गया।

मुख्य अतिथि झालावाड़ महाराजराणा चन्द्रजीतसिंह झाला ने कहा कि लोकार्पित कृति हाड़ौती और मालवा के इतिहास के मध्य एक सुदृढ़ सेतु का कार्य करेगी। केन्द्रीय सहकारी बैंक के प्रबंध निदेशक रायसिंह मौजावत ने कहा कि जिस स्थान का इतिहास नहीं होता वहां की सांस्कृतिक पहचान भी नहीं बन पाती है।

विशिष्टि अतिथि झालरापाटन की तहसीलदार श्रीमती अस्मिता सिंह ने कहा कि पुस्तक में न्याय, स्वतंत्रता, लोकसंस्कृति, समाज एवं राज्य की समानता का सुन्दर चित्रण मिलता है जिससे भावी पीढ़ी को इतिहास लेखन की प्रेरणा मिलेगी। इस अवसर पर पुस्तक लेखक इतिहासविद् ललित शर्मा का झाला राज परिवार की ओर से नकद राशि एवं अंगवस्त्र भेंट कर सम्मान किया गया। समारोह पश्चात महाराजराणा ने आगन्तुकों को झाला राजमहल के संग्रहालय में प्रदर्शित प्राचीन एवं पुरा वस्तुओं का अवलोकन कराया। संचालन ओम पाठक एवं आभार समिति अध्यक्ष दिनेश सक्सेना ने जताया।

एयरसेल पर असीमित कॉलिंग व डाटा प्लान

उदयपुर। एयरसेल ने पाथ ब्रेकिंग प्रोडक्टस आरसी15 तथा आरसी 249 लांच किए हैं। ये उत्पाद बेस्ट वेल्यू प्रपोजिशन के साथ देश में किसी भी नम्बर के लिए अनलिमिटेड कॉल्स प्रदान करते हैं।

एयरसेल के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर अनुपम वासुदेव ने कहा कि आरसी 15 ग्राहकों को एक दिन की वैधता के साथ सभी नेटवर्क्स पर अनलिमिटेड लोकल तथा एसटीडी कॉलिंग प्रदान करता है। ग्राहक एयरसेल से एयरसेल (लोकल तथा एसटीडी) तथा एयरसेल से अन्य को (लोकल तथा एसटीडी) अनलिमिटेड कॉल्स कर सकते हैं तथा निर्बाध जुड़े रह सकते हैं। आरसी 249 एक अदभूत उत्पाद है जो 28 दिनों की वैधता के लिए अनलिमिटेड कॉलिंग तथा अनलिमिटेड डाटा के लाभ प्रदान कर रहा है। ग्राहक सभी नेटवर्क्स पर अनलिमिटेड कॉल्स तथा अनलिमिटेड 2 जी डाटा का लाभ उठा सकता है। इसके अतिरिक्त 4 जी हैण्डसेट यूजर्स एक्स्ट्रा 1.5 जीबी 2 जी डाटा का लाभ हासिल कर सकते हैं। यह दूरसंचार उद्योग में अभी तक का सर्वाधिक वेल्यू वाला वाइस तथा डाटा प्रपोजिशन है।

डिज्नी का ऑनलाइन कोडिंग कार्यक्रम लॉन्च

उदयपुर। डिज्नी ने मुफ्त ऑनलाइन ट्यूटोरियल, 'मोआना: वेफाइंडिंग विथ कोड' लॉन्च किया। इस प्रोग्राम में कम्प्यूटर साइंस की बुनियादी बातों के बारे में बताया गया है और इसमें डिज्नी की आने वाली एनिमेटेड फिल्म मोआना के किरदार नजर आयेंगे। 'मोआना: वेफाइंडिंग विथ कोड' के लॉन्च के साथ-साथ डिज्नी ने दुनिया भर में एक्टिवेशंस की भी घोषणा की है। इसमें लाखों स्टूडेंट्स को कोडिंग की बुनियादी बातों को सीखने के लिए आमंत्रित किया गया है। नेक्स्ट एजूकेशन द्वारा पावर्ड यह प्रोग्राम भारत भर में विस्तारित किया जा रहा है। नेक्स्ट एजूकेशन महाराष्ट्र, गुजरात व राजस्थान में 700 से अधिक स्कूलों में इस ट्यूटोरियल को लेकर जायेगा।

प्रो. मांडोत एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर। बैंकाक में इन्टरनेशल कांग्रेस ऑन इन्फोरमेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी द्वारा 12-13 दिसम्बर को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेस में जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय की प्रो. मंजू मांडोत को भारत के उप मुख्य राजदूत अब्बा गनी रामू द्वारा एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया। प्रो. मांडोत ने सेमीनार में चेयरपर्सन के रूप में भाग लिया। उन्होंने इमेज प्रोसेसिंग विषय पर अपना पत्र वाचन प्रस्तुत किया।

'डेनिम ड्रिफ्ट' का अनावरण

उदयपुर। एक्ज़ोनोबल ने 2017 के लिए 'डेनिम ड्रिफ्ट' को कलर ऑफ द ईयर घोषित किया है। एक्ज़ोनोबल विशेष रसायन बनाने के साथ ही विश्व की अग्रणी पेंट्स एवं कोटिंग्स कंपनी है और यह भारत में ड्यूलक्स पेंट्स का उत्पादन करती है। एक्ज़ोनोबल के वार्षिक वैश्विक अध्ययन कलरफ्यूचर्सज्ड के 14वें संस्करण के हिस्से के रूप में, भारत में ड्यूलक्स के ब्रांड ऐम्बेसेडर फरहान अख्तर और श्रद्धा कपूर ने कलर ट्रेंड 'डेनिम ड्रिफ्ट' का अनावरण किया। उन्होंने कंपनी के ओवरराइडिंग ट्रेंड : 'लाइफ इन ए न्यू लाइट' को भी पेश किया।

एक्ज़ोनोबल डेकोरेटिव पेंट्स के प्रबंध निदेशक जेरेमी रोवे ने कहा कि नीला जिंदगी व रोजमर्रा की जिंदगी का रंग है। यह सुकून देने वाला और मन को शांति प्रदान करने वाला रंग है। 'डेनिम ड्रिफ्ट' इस ट्रेंड को बखूबी परिभाषित करता है, क्योंकि इसमें चुना गया शेड निश्चित रूप से इंडिगो ब्लू से हटकर है और यह हलका ब्लू-ग्रे का कॉम्बिनेशन है जिसे हमारे कैटालॉग में स्मोक ग्रे नाम दिया गया है। राजीव राजगोपाल, डायरेक्टर, डेकोरेटिव पेंट्स, एक्ज़ोनोबल इंडिया के अनुसार ड्यूलक्स अपने इनोवेटिव एवं श्रेणी में सर्वोत्तम इंटीरियर एवं एक्सटीरियर पेंट उत्पादों की व्यापक श्रृंखला के माध्यम से भारत में ग्राहकों को सभी महत्वपूर्ण कलर्स प्रदान कर रहा है। 'डेनिम ड्रिफ्ट' भी इंटीरियर एवं एक्सटीरियर पेंट्स की ड्यूलक्स श्रृंखला के जरिये उपलब्ध कराया जायेगा, ताकि ग्राहक 2017 में इसे अपनी जिंदगी का अहम हिस्सा बना सकें। फरहान अख्तर ने कहा कि कलर ऑफ द ईयर 2017 'डेनिम ड्रिफ्ट' हमारे प्रतिदिन के रंग का आवश्यक हिस्सा है। जब गहरे शेड्स के साथ इसका इस्तेमाल किया जा जायेगा तो यह आपकी दीवारों को जीवंत बना देगा। श्रद्धा कपूर ने कहा कि 'डेनिम ड्रिफ्ट' वास्तव में अपनाने योग्य है और सभी प्रकार की जिंदगी एवं इंटीरियर स्टाइल्स से मेल खाता है।

लेकसिटी में अनोखा फोटोग्राफी अधिवेशन

उदयपुर। लेकसिटी कैमरा क्लब सोसायटी द्वारा लेकसिटी उदयपुर में 7 से 9 दिसंबर तक राष्ट्रीय फोटोग्राफी अधिवेशन आयोजित हुआ जिसमें देशभर के 200 से अधिक पुरूष एवं महिला फोटोग्राफर्स, फोटो जर्नलिस्ट्स एवं स्टूडेंट्स ने भागीदारी की। अधिवेशन का शुभारम्भ महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, राकेश शर्मा 'राजदीप' दिनेश पगारिया, डॉ. अनिल रिसाल तथा एफआईपी अध्यक्ष डॉ. वरूणसिंह के हाथों दीप प्रज्वलन एवं गणपति वन्दना के साथ हुआ।

इस अवसर पर एफआईपी अध्यक्ष डॉ. वरूणसिंह ने कहा कि फोटोग्राफी एक यूनिवर्सल लेंग्वेज है। इसके लिए राजस्थान स्वर्ग है। इसका एक हजार शब्दों से भी ज्यादा महत्व है। उदयपुर के इस समारोह में हम फोटाग्राफी पहनेंगे, खायेंगे, गायेंगे, नाचेंगे, सायेंगे और यहां से एक सुंदर यादगार लेकर जायेंगे। उन्होंने कहा कि फोटोग्राफी के बिना जीवन ही अधूरा है। हर व्यक्ति अपने जीवन के महत्वपूर्ण, सुनहरे और यादगार पलों को कैमरे में कैद करना चाहता है और बाद में आगे जाकर यही फोटो हमारे सुनहरे और यादगार पलों की याद दिलाते हैं। उन्होंने कहा कि जब एक ही विचारधारा वाले लोग एक साथ एक ही मंच पर मिलते हैं तो कुछ अलग से हटकर और नये आईडिया निकल कर आते हैं तो अपने ज्ञान में और वृद्धि होती है।

डॉ. अनिल रिसाल ने कहा कि अतिथि देवो भव: की कहावत यहां सही मायनों में चरितार्थ होती है। यहां की प्राकृतिक सुंदरता दुनियाभर में मशहूर है किन्तु यह और सबसे बड़ी बात है कि यह सिटी फोटोग्राफरों के लिए भी स्वर्ग की तरह है जिसे अपने कैमरे में कैद करने के लिए हर कोई लालायित रहता है।

मुख्य अतिथि महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने कहा कि हमारी दो आंखों के अलावा एक तीसरी आंख और होती है जो कैमरे की होती है। फोटोग्राफी का भी एक मूक संदेश होता है। यह लोकतंत्र का एक मजबूत स्तंभ है। उदयपुर का यह अधिवेशन पुराने अनुभवी फोटोग्राफरों एवं नये सीखने वाले फोटोग्राफर विद्यार्थियों का अनूठा संगम है जिसका लाभ निश्चित तौर पर नयों को मिलेगा।

अधिवेशन में भाग लेने आये पद्मश्री सुधारक ओलवे ने कहा कि दुनिया में कई अच्छी-अच्छी फोटोग्राफी होती है जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बनती है। इसका एक ही कारण है- काम के प्रति जुनून और उसमें गहराई से डूब जाना। जो कला के प्रति न्यौछावर हो जाते हैं सफलता उनके ही कदम चूमती है।

लेकसिटी कैमरा क्लब के अध्यक्ष राकेश शर्मा 'राजदीप' ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि यह लेकसिटी के लिए गर्व की बात है कि इस राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन यहां किया जा रहा है। पिछले पांच वर्षों से लेकसिटी कैमरा क्लब सोसायटी फोटोग्राफी एजुकेशन का काम भी कर रही है जिसका लाभ कई विद्यार्थियों को मिला है।

समारोह में विशाल भिंडे, हरी महीधर, विनयनारायण परिकर, पद्मश्री सुधारक ओलवे, शिवजी जोशी, अनूप शाह तथा अनिल शाह सहित विद्यार्थी सुनील निमावत एवं डिम्पल चूण्डावत का सम्मान किया गया जो फोटाग्राफी पर शोधरत हैं। इसके अलावा विविध क्षेत्रों में स्थापित वरिष्ठजनों में लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत, रमेश खतूरिया, नेल्सन नथालिया, डॉ. भगवतीलाल व्यास, डॉ. इकबाल सागर, डॉ. प्रेम भंडारी, श्रीमती शकुंतला पंवार, तोलाराम मेघवाल, गोपाल शर्मा, खुर्शीद नवाब, डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर, डॉ. राजशेखर व्यास, जमनालाल दशोरा तथा डॉ. सुरेश शर्मा का सम्मान किया गया। समारोह के दौरान क्लब की ओर से प्रकाशित उपयोगी जानकारियों से युक्त स्मारिका का विमोचन किया गया।

अधिवेशन का दूसरा दिन आउटडोर सेशन्स के नाम रहा। दो अलग-अलग सत्रों में प्रतिभागियों ने सास-बहू मंदिर, जंगल सफारी पार्क एवं शिल्पग्राम में फैशन फोटोग्राफी, मॉडलिंग फोटोग्राफी, ट्रेडिशनल एवं लाइटिंग फोटोग्राफी के गुर सीखे। इस दौरान लाईट-कैमरा-एक्शन की गूंज रही।

अंतिम दिन ग्रामीण परिवेश में सजेधजे शिल्पग्राम की हसीनवादियों में प्रत्येक प्रतिभागी ने फोटोशूट का लुत्फ उठाया और यहां के प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ फैशन फोटोग्राफी, मॉडलिंग फोटोग्राफी, ट्रेडिशनल फोटोग्राफी एवं वेस्टर्न फोटोग्रफी को अपने कैमरें में कैद किया। बाद में एफआईपी मेम्बर की जनरल बोर्ड की बैठक हुई जिसमें नई कार्यकारिणी का गठन किया गया।

सचिव दिनेश पगारिया ने बताया कि समापन सत्र में देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये 70 से 90 वर्ष तक की उम्र के 11 वरिष्ठ फोटोग्राफरों का सम्मान किया गया। वर्ष 2018 में मणिपुर में अधिवेशन करने का प्रस्ताव पारित किया गया।

वोडाफोन एम-पैसा पे लान्च

उदयपुर। वोडाफोन इण्डिया ने इस्तेमाल में आसान डिजिटल पेमेन्ट सोल्यूशन 'वोडाफोन एम-पैसा पे' लॉन्च की घोषणा की है। वोडाफोन एम-पैसा पे द्वारा मर्चेन्ट्स एवं रीटेलर्स आसानी से नकदी के विनिमय के बिना ही अपने उपभोक्ताओं से भुगतान प्राप्त कर सकेंगे।

वोडाफोन इण्डिया के एमडी और सीईओ सुनील सूद ने कहा कि इस आसान डिजिटल भुगतान समाधान का इस्तेमाल करने के लिए रीटेलरों और मर्चेन्ट्स को वोडाफोन एम-पैसा ऐप डाउनलोड करना होगा और मर्चेन्ट के रूप में वोडाफोन एम-पैसा पे के लिए रजिस्टर करना होगा। एक बार रजिस्टर करने के बाद वे उपभोक्ता को भुगतान के लिए नोटिफिकेशन दे सकते हैं। उपभोक्ता नोटिफिकेशन पर क्लिक करेगा और अपने एम-पैसा वॉलेट, बैंक खाते, डेबिट या क्रेडिट कार्ड के माध्यम से सुरक्षित एवं आसान भुगतान कर सकेगा। सुनील सूद ने कहा कि प्रधानमंत्री जी ने डिजिटल इण्डिया एवं कम नकदी की अर्थव्यवस्था की ओर कदम बढ़ाया है। हमने 2013 में वोडाफोन एम-पैसा लॉन्च के साथ वित्तीय एवं डिजिटल समावेशन की दिशा में अपनी यात्रा की शुरूआत की थी और अब तक देशभर में 8.4 मिलियन उपभोक्ताओं और तकरीबन 1,30,000 आउटलेट्स के साथ हम इस दिशा में पर्याप्त प्रगति कर चुके हैं।

वोडाफोन एम-पैसा पे के लॉन्च के साथ हम मर्चेन्ट्स एवं रीटलरों को एक ऐसा मंच उपलब्ध कराएंगे जिसके द्वारा डिजिटल भुगतान को आसान बनाया जा सकेगा और लाखों उपभोक्ता डिजिटल भुगतान के लिए प्रोत्साहित होंगे।

रवीन्द्र डूंगरवाल दूरदर्शन उदयपुर के निदेशक बने

भारतीय अभियांत्रिकी सेवा के 1998 बैच के वरिष्ठ अधिकारी रवीन्द्र डूंगरवाल उदयपुर दूरदर्शन के संभागीय केन्द्र के निदेशक बने। श्री डूंगरवाल पूर्व में भी यहां के केन्द्राध्यक्ष पद पर रह चुके हैं। तब उन्होंने कई नये अभिनव प्रयोग कर इस केन्द्र को विशिष्ट पहचान दिलाई। उनके कार्यकाल में यह केन्द्र सर्वोतम अनुरक्षित केन्द्र घोषित हुआ। मूलत: कानोड़ कस्बे के निवासी श्री डूंगरवाल पं. उदय जैन के पौत्र हैं जिन्होंने आजादी पूर्व शिक्षा का अलख जगाया और जवाहर विद्यापीठ की स्थापना की। उन्हें मेवाड़ के मालवीय नाम से ख्याति मिली। उनके पुत्र हिम्मत डूंगरवाल ने अंतिम समय तक विद्यापीठ के संचालक पद को सुशोभित किया। उनके पुत्र के रूप में श्री रवीन्द्र सुयश अर्जित किये हैं।

ठप्प खड़ा छोटीसादड़ी जैन गुरुकुल

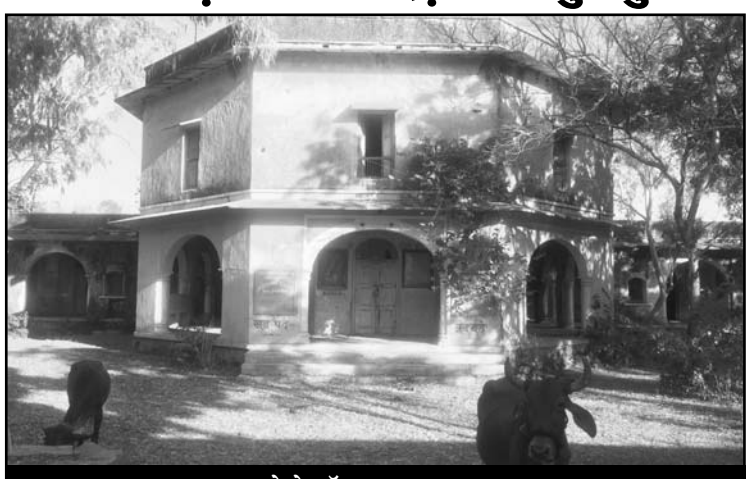

फोटो डॉ. तुक्तक भानावत

शब्द रंजन के गत अंक में डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा 'छोटीसादड़ी जैन गुरुकुल में दो वर्ष जैसे सौ वर्ष' नामक आलेख लिखा गया था। उसी संदर्भ में 12 दिसंबर को डॉ. तुक्तक भानावत ने छोटीसादड़ी जाकर गुरुकुल के ट्रस्टी शांतिलाल नाहर से भेंट की। उन्होंने बताया कि अदालत में वाद के चलते सारी प्रवृत्तियां ठप्प पड़ी हैं और गुरुकुल ताले में जकड़ा दुर्दिन के आंसू बहा रहा है।

कोई समय था यहां से निकला छात्र पंडित नामधारी बन समाज में गर्वित बना रहता। पं. काशीराम त्रिवेदी, पं. महेश चन्द्र जैन, पं. बसन्ती लाल जैन, पं. उदय जैन, पं. शोभाचंद वया, पं. केशरी किशोर नलवाया जैसे और अनेक नाम हैं जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में देश-दुनियां में कीर्तिमान हांसिल किये जो गुरुकुलीय इतिहास के स्वर्ण पृष्ठों में शोभित हो सकते हैं।

सम्बोधन द्वारा आचार्य निरंजननाथ सम्मान

साहित्यिक पत्रिका सम्बोधन द्वारा दिया जाने वाला 51 हजार रूपये का आचार्य निरंजननाथ सम्मान लखनऊ के कथाकार सुभाषचन्द्र कुशवाहा को उनकी पुस्तक लाला हरपाल के जूते तथा अन्य कहानियां पर तथा 11 हजार का विशिष्ठ साहित्यकार सम्मान कांकरोली के अफजल खां अफजल को उनके साहित्यिक अवदान पर प्रदान किया गया। यह जानकारी सम्मान समिति के संयोजक कमर मेवाड़ी ने दी।

हमारे पास शब्द रंजन है
आपके पास और भी बहुत कुछ
कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधानक शीघ्र प्राप्त होंगी।
shabdranjanudr@gmail.com

पहले ऐसा नहीं होता था

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

पहले ऐसा नहीं होता था
कि मौसम बहुत अच्छा हो और बरसात नहीं हो!
पानी की एक बुंद भी नहीं टपके और मजा आ जाय
सब में बदलाव आ गया है।
चीजें वे ही हैं, जायका वह नहीं रहा।
अब रामजी का घोड़ा उड़कर नहीं आता
कुम्हारों की बस्ती में एक भी गधा नहीं रहा
उड़न्ये मकोड़ों का मौसम तो आया ही नहीं।
सबको खबर करदो पांच दिन का सप्ताह हो गया है।
तुम आस्था की बात करते हो
बालों का चढावा ही करोड़ों तक जा पहुंचा है।
जनकदा प्रण न करें
सीता स्वत: ही अपनी मर्जी से
राम को तलाश हनीमून चली जायेगी।
कुछ पता ही नहीं चलता
सारे सम्बन्ध स्वच्छंद हो गये हैं
डोकरे डोकरी व्यर्थ में चिंतित हैं
कि आंगन कुंवारा रह गया
उन्हें गुड़ की लपसी बेसन की चक्की
और माजीचूर के लड्डू की भावड़ आ रही है।
पोते ने कभी गुड़ भी नहीं देखा
पूछता है-
वह कौनसी चक्की थी जिसे चलती देख
कबीरा रो दिया था।
कितने भोले थे मेरे नानाजी
पहलीबार शहर मेरे घर आये
तो चारों ओर टाइल्स लगे
लेट्रिन वाले रूम को देख सकपका गये
और कोने में कमोड़ देख सिर झुकाने लगे
बोले- धन्य हो गया
पगल्याजी की ऐसी भव्य मंदरी
कोई भगवान ही बनाता है
उसे सात जन्मों का पुण्य मिलता है।
तुम अपनी धोती को खुसर पुसर करते रहे
मैं कुछ नहीं बोला
मैंने जरा से बाल क्या बढ़ा लिये
तुम उन्हीं के पीछे पड़ गये।
मैं जानता हूं
बाल बढ़ाने से कद नहीं बढ़ता
मगर जो मैं बढ़ा सकता हूं
वही तो बढ़ाऊंगा।
लक्ष्मण अब पछता रहा है
काश ! वह प्रेयसी पा लेता
तो पर्ण कुटी प्रासाद बन जाती।
जरा सी चूक ने कितना अनर्थ कर दिया
दश रथ भर जाते सोने से
और भाभी बच जाती खोने से
गोल्डन चांस बार-बार नहीं आता।
अंग पर रेजी पहन कर
हमने अंगरेजी ओढ़ली
और हिन्दी की हिन्दी कर दी।
कोयल के बच्चे जब कौए पालेंगे
तो कागले ही होंगे।
ऐसे सपूत जो मावड़ के भाल पर
बिन्दी लगाने की बजाय चिन्दी लहरायेंगे।

शॉप एण्ड विन फेस्टिवल शुरू

उदयपुर। सर्दी एवं क्रिसमस के मौके पर खुशियों की सौगात देने के लिए 35 दिवसीय शॉप एण्ड विन कार्निवल विन्टर फेस्टिवल लेकसिटी मॉल में शुरू हुआ। इसमें विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिता के साथ-साथ मनोरंजन के कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। मॉल के दीपेश भारद्वाज ने बताया कि यूनिक आर्ट इवेन्ट्स के तत्वावधान में आयोजित हो रहे इस फेस्टिवल में कोई भी व्यक्ति, महिला या बालक नि:शुल्क भाग ले सकता है। उन्होंने बताया कि प्रतियोगिता में फैन्सी ड्रेस, फैशन शो, जुम्बा, पपेट शो, ड्राईंग, तम्बोला या हाउजी, कोमेडी शो, स्केटिंग, लाइव बैण्ड, ट्रेज़र हण्ट, सेल्फी कोन्टेस्ट, मिमिक्री, बैलून ब्रस्ट, सिंगिंग, मॉडलिंग, केरम, चेस, बॉलीवुड डांस, टैटू, मेहन्दी, पावर लिफ्टिंग, बेस्ट ऑउट ऑफ वेस्ट, रेपिड फायर सहित अनेक प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं जिसके विजेताओं को हाथों-हाथ पुरस्कृत किया जा रहा है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-

ऑरेंज फ्लेवर लांच

उदयपुर। पास पास पल्स ने नया फ्लेवर 'पल्स ऑरेंज' लांच किया है। ऑरेंज सबसे लोकप्रिय फ्लेवर्स में से एक है, जिसे हर उम्र के लोग पसंद करते है। पल्स ऑरेंज, बीच में भरे पाउडर और टैंगी ऑरेंजी अनुभव के साथ अपनी पहचान बनाने के लिए तैयार है। यह नए कैंडी पिलो पैक में एक रुपये की कीमत पर उपलब्ध होगा। पल्स ऑरेंज टेस्टबड्स को उत्साह प्रदान करने का वादा करता है, जिसकी शुरुआत फ्रूटी ऑरेंज फ्लेवर के साथ होगी और चटपटे ट्विस्ट के साथ यह और रोमांचक हो जाएगी। कैटेगरी ब्रेकर 'पास पास पल्स' ऑरेंज निश्चित रूप से आपको टैंगी मसाला के साथ संतरा खाने की पुरानी यादें ताजा कर देगा।

देश के प्रमुख शहरों में कुछ महीने पहले किये गये टेस्ट मार्केटिंग में 'पल्स ऑरेंज' को काफी उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली है। 'डीएस ग्रुप' के वितरण नेटवर्क का पूरा लाभ उठाते हुए टारगेट ग्रुप तक पहुंचने के लिए समूचे देश में कैंडी लांच की जाएगी। दृश्यता और पहुंच हासिल करने के लिए पल्स ऑरेंज को विभिन्न उपभोक्ता संपर्क गतिविधियों के माध्यम, जैसे इन-शॉप डिस्प्ले, व्यवसायिक प्रमोशन और फोकस्ड सैंपलिंग जैसी गतिविधियों के साथ लांच किया जायेगा। ऑरेंज, पास पास पल्स की कच्चा आम और अमरूद के बाद यह तीसरी पेशकश है।

कान्यो मान्यो

बेअर्थ होती कहावतें

लोकजीवन असल में श्रुत साहित्य का ही जीवन है। यह साहित्य कागज-लेखी नहीं होकर कंठ-बैठी होता है। इनमें कहावती साहित्य का प्रचलन सर्वाधिक मिलता है। छोटी सी कहावत बड़ा गूढ़ अर्थ लिए होती है। विद्वान लोग उसकी व्याख्या में चाहें तो कई व्याख्यान दे सकते हैं। मान्यो बड़ी गंभीरतापूर्वक कान्यो की यह गूढ़ सीख चुपचाप सुनता रहा। मन में सोचा कि दीवाली के अवसर पर बाहर ही नहीं, उसका अन्तर भी उजास से भर गया लगता है।

वह बोला- कान्यो भाई, दीवाली की साधना आपको फल गई लगती है। कई लोग तरह-तरह की साधना कर कई तरह के मंत्रादि साधते हैं। इनमें तामस-शक्तियों को वश में करने के मंत्र बड़े कारगर होते हैं लेकिन दूसरी ओर कई कहावतें व्यर्थ हुई जा रही हैं जिससे हमारी ज्ञान की समृद्ध थाती सिमटती जा रही है बल्कि सदैव के लिए मिटती, मटियामेट होती दिख रही है।

कान्यो ने फूंक मारी- सो कैसे? कोई उदाहरण पेश करो। मान्यो बोला- जैसे बहू अपनी सास के पांव लगेगी तब वह आशीर्वाद स्वरूप कहेगी- दूधां न्हावो पूतां फलो अर्थात् खूब दूध दो और पूत-फलवती बनो। कान्यो बोला- सो तो ठीक, पर अब तो यह कहावत बेमानी सिद्ध हो गई है। मान्यो पूछ बैठा- कैसे? कान्यो बोला- सरकार ने नारा दिया है- बच्चे दो ही अच्छे। दो से अधिक संतान पैदा करने पर नौकरी तक नहीं मिलती और कई तरह के लाभ से वंचित रह जाना पड़ता है। फिर अधिक संतानवाला सामाजिक दृष्टि से भी सम्माननीय नहीं माना जाता। यों जीवन भी इतना अधिक दूभर हो गया है कि ठीक ढंग से अधिक बच्चों का पालन पोषण भी नहीं किया जा सकता।

मान्यो ने कान्यो की बातों में शत-प्रतिशत सहमति-सिर हिलाया किन्तु मन के किसी कोने में लुकी वेदना को भी नहीं रोक सका। पूछ बैठा- तुम तो बुद्धिमान और विरासत के रखवाले हो। कोई ऐसा उपाय निकालो कि लाठी भी नहीं टूटे और सांप भी मर जाय। तपाक उसने सिर पर हाथ की ऊंगली टिकाई और समाधान देता बोला- एक ही उपाय सूझ रहा है। या तो कहावत को मरी-लाश होती देखो या फिर उसका अर्थ बदल दो। शब्द यूं के यूं रहें।

कान्यो बोला- ढबजा, बड़ेरों री बुद्धि को दाद दे कि कैसे अनुभवों को निचोड़-निचोड़ सार-रूप में उन्होंने हमें कहावती-धरोहर सौंपी और हम हैं कि उस धरोहर का संरक्षण भी मुश्किल से कर पा रहे हैं। बोला- मेरी बुद्धि में एक अर्थ उपजा है सो मैं तुम्हें सुना देता हूं- 'बच्चे उतने ही पैदा करो जितने दूध में नहला सकें।' मान्यो यह सुनते ही कान्यो से लपक पड़ा, बोला-यह तो लाख टके से भी ऊपर सवा लाख टके की बात हुई।

मिस्टर भारतीय ऐप की उदयपुर में भव्य लॉन्चिंग

उदयपुर। अब स्कूली बच्चों को घर बैठे मोबाइल एप पर वीडियो ट्यूटोरियल्स के माध्यम से अपने पाठ्यक्रम की पुस्तकों का ज्ञान नि:शुल्क मिल जाएगा तो उनकी शैक्षिक तरक्की

में चार-चांद लग जाएंगे। सबसे ज्यादा फायदा उन विद्यार्थियों को होगा जो दूर-दराज के गांवों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं। शिक्षा की डिजिटल अलख जगाने और देश के सबसे बड़े स्कूल बनाने का सपना साकार करने के लिए उदयपुर में मंगलवार को 'मिस्टर भारतीय' मोबाइल एप्लीकेशन की लांचिंग की गई। लांचिग अवसर पर ही मिस्टर भारतीय एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर मनोज राजपुरोहित, दिनेश राजपुरोहित, धीरेन्द्र श्रीमाली, मनीष जोशी, हिमांशु माथुर, डॉ. स्वाति गोखरू, हिमांशु कोठारी ने ऐप के ब्रॉशर का भी विमोचन किया।

मिस्टर भारतीय एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर मनोज राजपुरोहित ने होटल आमंत्रा कम्फर्ट में आयोजित प्रेसवार्ता में बताया कि लॉन्चिंग के साथ ही 14.5 एमबी के इस ऐप को कोई भी विद्यार्थी गूगल प्ले स्टोर, एप्पल स्टोर सहित अन्य माध्यमों से आसानी से डाउनलोड कर सकता है। ज्ञान के इस अथाह भंडार को देश के मूर्धन्य शिक्षकों के कई नायाब ट्यूटोरियल्स से सुसज्जित किया गया है। पहले चरण में एनसीईआरटी के पाठ्यक्रम के अनुसार 9वीं से 12वीं कक्षा के विषयों पर वीडियो हिन्दी व अंग्रेजी में उपलब्ध हैं जिन्हें तीन राज्यों के 19 शिक्षकों की टीम ने 550 वीडियो ट्यूटोरियल एलएम एस तकनीक (लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम विद ग्राफिक व्यू) से तैयार किए हैं। जो बच्चे महंगे कोचिंग अफोर्ड नहीं पाते हैं, उनके लिए यह वरदान साबित होगा। यहां उन्हें कंटेंट के साथ ही शॉर्ट नोट्स कैप्स्यूल, ट्यूटोरियल, अभ्यास प्रश्नों के सेट, परिकल्पनाओं व अवधारणाओं से संबंधित सभी समस्याओं का सरल और सिलसिलेवार उत्तर मिलेगा। इन नोट्स को ऑफलाइन भी पढ़ा जा सकता है। यही नहीं एग्जाम की सटीक तैयारी के लिए नोट्स के प्रिंट भी लिए जा सकते हैं। राजपुरोहित ने बताया कि भारत में पहली बार यह एक अद्वितीय पहल शुरू हो रही है। इससे समय की बचत भी हो सकेगी। सभी लेक्चर के वीडियो उपलब्ध होने से छात्र अपनी सुविधानुसार बार-बार और जितनी बार देखना चाहें देख सकेंगे।

इससे उनका महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित हो सकेगा और किसी विषय को पुन:-पुन: समझने में आसानी रहेगी। मिस्टर भारतीय पर उपलब्ध लेक्चर कम अवधि के हैं जिससे विद्यार्थी अपने समय का सदुपयोग कर सकेंगे। वीडियो में उपलब्ध एनिमेशन और चित्रों के माध्यम से विषय को समझना सरल होगा। सभी लेक्चर अनुभवी एवं पारंगत शिक्षकों द्वारा तैयार किये हुए हैं। जो विषय पढ़ाया जा रहा है वह पूरी गुणवत्तापूर्ण होने के साथ-साथ पाठ्यक्रम के अनुसार हो, इसका पूरा ध्यान रखा गया है। वीडियो के अलावा विद्यार्थी नोट्स एवं टेस्ट से अपना मूल्यांकन कर सकेगा।

उन्होंने बताया कि स्टार टीचर्स राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम द्वारा सम्मानित एवं गुगूल से प्रमाणित प्रोफेसर्स हैं जो अपने विषयों के निष्णात और शोध में 25 से अधिक वर्ष का अनुभव लिए हैं। मिस्टर भारतीय समय की मांग और समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। इससे जहां एक ओर बालिका शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा वहां कोचिंग में व्यर्थ में खर्च हो रहे धन में कमी आएगी। प्राइवेट परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों को भी यह उत्प्रेरित करेगा और अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों में जो तनाव और आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है, उस पर अंकुश लगेगा।

सक्का द्वारा विश्व का सबसे छोटा एश-ट्रे

उदयपुर के अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण शिल्पकार इकबाल सक्का ने 23 केरट सोने से विश्व का सबसे छोटा एश-ट्रे मात्र 7 मिलीमीटर अर्धव्यास एवं 4 मिलीमीटर ऊंचे एश-ट्रे में 7 मिलीमीटर के नर कंकाल के साथ-साथ 5 मिलीमीटर की फिल्टर लगी सिगरेट बनाकर धूम्रपान छोड़ने का नया सन्देश दिया। इस कलाकृति के माध्यम से सक्का ने फतहसागर, दूधतलाई जैसे दर्शनीय स्थानों पर अपनी प्रस्तुति द्वारा अनेकों को धूम्रपान नहीं करने को प्रेरित किया है।

इसी प्रकार मिनिऐचर आर्टिस्ट चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा ने एक सूक्ष्म पुस्तिका तैयार की है जिसमें राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी एवं अभिनेता दिलीप कुमार के जीवन परिचय के साथ उनकी देन को बारीकी से उकेरा है।

डॉ. मेहता फिजियो रत्न से सम्मानित

उदयपुर। दिल्ली के ऑल इण्डिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्स (एम्स) एवं जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में 10-11 दिसम्बर को फिजीकल थैरेपी की अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेन्स में फिजियोथेरेपी विभाग के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र मेहता को उनके द्वारा विगत् 15 वर्षों में किये गये उत्कृष्ट कार्यों के फलस्वरूप 'फिजियो रत्न' सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ. मेहता द्वारा लिखी गई MANAGEMENT OF LYMPHEDEMA पुस्तक का विमोचन भी किया गया। कॉन्फ्रेन्स में जर्मनी, कोलम्बिया, अफगानिस्तान, मलेशिया एवं भारत के लगभग 800 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

जिंक को राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण अवार्ड

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक की रामपुरा आगुचा खदान को वर्ष 2016 में ऊर्जा सरक्षंण हेतु किए गये सराहनीय कार्यों के लिए भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय ने द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया है। यह पुरस्कार भारत सरकार के माननीय ऊर्जा, कोल, न्यू एण्ड रिन्यूवबल एनर्जी एवं खान मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीयूष गोयल, ऊर्जा मंत्रालय के सचिव पी.के. पुजारी एवं विशिष्ट सचिव बी.पी. पानेय से नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में जिंक्र के आगुचा खान के जे. बालासुब्रमणयम एवं अखिलेश कुमार ने ग्रहण किया।

हिन्दुस्तान जिंक्र के हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि जिंक्र सौर ऊर्जा परियोजना विस्तार के तहत जनवरी 2016 में उदयपुर एवं चन्देरिया लेड-जिंक्र स्मेल्टर, चित्तौड़गढ प्रत्येक में 100 किलोवाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित कर चुका है। कंपनी राजस्थान के अन्य भागों में भी सौर ऊर्जा परियोजनाओं को विकसित करने के लिए तत्पर है।

विजेताओं ने की राष्ट्रपति से मुलाकात

उदयपुर। टाटा बिल्डिंग इंडिया स्कूल निबंध प्रतियोगिता 2014-15 के नौवें संस्करण के राष्ट्रीय विजेताओं को सम्मान समारोह के तहत् राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में भारत के माननीय राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी से मिलने का अवसर मिला। वर्ष 2006 में शुरू टाटा बिल्डिंग इंडिया स्कूल निबंध प्रतियोगिता भारत का सबसे बड़ा राष्ट्रीय स्कूल निबंध प्रतियोगिता है, जिसमें कक्षा 6 से 12वीं तक के छात्रों को राष्ट्र निर्माण पर अपनी राय और प्रासंगिक मुद्दों पर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का मंच प्रदान किया जाता है।

कॉरपोरेट अफेयर्स के कंट्री मैनेजर रंजीत गोस्वामी ने कामयाब युवाओं को पुरस्कार प्रदान किए। विजेताओं को पुरस्कार के रूप में टाटा बिल्डिंग इंडिया ट्रॉफी और एक-एक लैपटॉप प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि श्री गोस्वामी ने कहा कि मैं टाटा बिल्डिंग इंडिया स्कूल निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं और सभी प्रतिभागियों को बधाई देता हूं। छात्रों की ओर से जमा कराई गई प्रविष्टियों में उनकी राय और उत्कृष्ट विचारों के स्पष्ट संकेत थे और यह युवा मन की प्रतिभा को प्रदर्शित करता है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।